हिन्दी पाठ-६

मातृभाषा - हिन्दी

FA6HVJ

कक्षा - ६

ओड़िशा शासन

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण, भुवनेश्वर

हिन्दी पाठ- ६

मातृभाषा-हिन्दी

कक्षा - ६

पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति

१. प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष

२. डॉ. स्मरप्रिया मिश्र

३. डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र (प्रभारी)

४. डॉ. स्नेहलता दास

संयोजिका :

डॉ. प्रीतिलता जेना

डॉ. तिलोत्तमा सेनापति

डाँ. सविता साहु

प्रकाशक :

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,

ओड़िशा सरकार

प्रथम संस्करण : २०१२

२०१९

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ओड़िशा, भुवनेश्वर

और

ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

आइए, ऐसा करें :

इस नए पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भिन्नता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थियों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ–स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थियों द्वारा उस कार्य को कराएँ। लेखन-शैली बता दें, फिर लिखवाएँ। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक करवाएँ। लघु निबंध, छोटे-छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्तरों में प्रचलित पत्रों आदि पर अभ्यास कराया जाए।

दूसरी बात है–भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक अपनी तरफ से भी नई प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें । इससे बच्चों की रुचि परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण-पल्लवन होता है।

तीसरी बात है- मूल्यांकन-शैली में परिवर्तन। विद्यार्थियों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया जाए। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधिक महत्व रखता है। साल में दो-एक परीक्षा के महत्व को कम करके तात्कालिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक संख्या में हों। सबका मूल्यांकन अंतिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठ्यपुस्तक को पहले देख लें, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिक्षा-शैली बनाएँ। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की सक्रियता से भाषा- शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का संवैधानिक कर्तव्य है। यह सारे देश के जन-जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किया जाए। क्योंकि ये शिक्षण के सरल और सशक्त साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

विषय-सूची

क्र.नं	विषय		कवि / लेखक	पृष्ठा
१.	शत-शत बार प्रणाम	(कविता)	संकलित	०१
२.	ऐसे थे वे	(संस्मरण)	महादेवी वर्मा	०३
३.	बरसात की आती हवा	(कविता)	हरिवंश राय बच्चन	०९
४.	मित्रता	(निबंध)	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	११
५.	रत्नमाला	(कविता)	कबीर, सूर, तुलसी, रहीम	१६
६.	नादान दोस्त	(कहानी)	प्रेमचंद	२०
७.	पढ़क्कू की सूझ	(कविता)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	२९
८.	ऐसे - ऐसे	(एकांकी)	विष्णु प्रभाकर	३३
९.	मैं सबसे छोटी होऊँ	(कविता)	सुमित्रानंदन पंत	४३
१०.	उत्कलमणि	(जीवनी)	संकलित	४६
११.	पुष्प की अभिलाषा	(कविता)	पं.माखनलाल चतुर्वेदी	५२
१२.	एक पत्र देशवासियों के नाम	(पत्र)	अशफाक	५५
१३.	झाँसी की रानी	(कविता)	सुभद्रा कुमारी चौहान	५८
१४.	अंतरिक्ष सूट में बंदर	(काल्पनिक कहानी)	अमृतलाल नागर	६३
१५.	चंद्रशेखर वेंकटरमण	(विज्ञान)	संकलित	६८
१६.	शांतिदूत श्रीकृष्ण	(केवल पढ़ने के लिए)	संकलित	७२
१७.	प्रार्थना	(केवल पढ़ने के लिए)	संकलित	७५

शत-शत बार प्रणाम

संकलित

FAFDX7

हे अमरों की जननी
तुमको शत-शत बार प्रणाम,
मातृभूमि जननी हम सब की
तुमको शत-शत बार प्रणाम ।

हिमगिरि मुकुट बना मस्तक का
चरण-चूमता अथाह सागर,
गंगा-यमुना हार बनी हैं
धाराओं में कितना मृदु स्वर !

फल-फूलों से लदी डालियाँ
हरे-भरे हैं खेत झूमते,
रंग-बिरंगे पक्षी गाते
वन्य-जंतु निर्भय घूमते ।

ज्ञान और विज्ञान की धरती
साँस-साँस में वेद ऋचाएँ
सत्य-अहिंसा की है शक्ति
दया-प्रेम पर हम इतराएँ ।

ऐसी माँ की रक्षा के हित
सौ-सौ बार तजें हम प्राण,
जब तक है यह अपना जीवन
नित गाएँ तेरा गुण गान ।

मातृभूमि जननी हम सबकी
तुमको शत-शत बार प्रणाम ।

शब्द-अर्थ

अमर - देवता, जो न मरे	मृदु- मीठा, मधुर
अथाह - गहरा	वेद ऋचाएँ- वेदों के मंत्र
वन्य - जंगली	वेद भारतीय संस्कृति के आदि ग्रंथ हैं । वेद चार
नित - सदा, नित्य	हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद , साम वेद और अथर्व वेद
प्रणाम - नमस्कार, नमस्ते, अभिवादन	तजें - छोड़ें, त्याग करें
सागर - समुद्र, वारिधि, जलनिधि	जननी - माँ, माता
शत - सौ	हिमगिरि - हिमालय, हिमराज, हिम शैल

अभ्यास

भाव बोध :

१. अमरों की जननी कौन है ? उसे ऐसा क्यों कहा गया है ?

२. हिमालय को भारत का मुकुट क्यों कहा गया है ?

३. इस कविता में देश की किन-किन विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है ?

४. 'ज्ञान और विज्ञान की धरती' कौन है ? ऐसा कहने का तात्पर्य क्या है ?

५. अपनी मातृभूमि के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

६. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो :

(क) सत्य अहिंसा की है शक्ति

(ख) ज्ञान विज्ञान की धरती

(ग) गंगा यमुना हार बनी हैं,
धाराओं में कितना मृदु स्वर !

अनुभव विस्तार :

३. (क) देशप्रेम विषयक कुछ कविताएँ याद करो ।

(ख) ऐसी कविताओं का अभ्यास करो और कक्षा में गाओ ।

(ग) शिक्षकों से पूछकर वेदों के बारे में जानकारी प्राप्त करो ।

(घ) भारत वर्ष की प्राकृतिक और भौगोलिक समृद्धि की सूचना प्राप्त करो ।

ऐसे थे वे

महादेवी वर्मा

(यह पाठ संस्मरण के रूप में है, जिसमें सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका महादेवी वर्मा ने जवाहरलाल नेहरू से अपने प्रथम साक्षात्कार का वर्णन किया है । तब वे बालिका ही थीं। अत: उनकी बालसुलभ चेष्टाओं और नेहरू जी की चुटकियों ने इसे अत्यंत रोचक बना दिया है । नेहरू जी के प्रधानमंत्री बनने पर वे फिर उनसे मिलने जाती हैं । नेहरूजी के मुक्त और स्नेहभरे व्यवहार और आत्मीयता से वे बहुत प्रभावित होती हैं ।)

इस सदी के दूसरे दशक की बात है । मैं अपनी बहन के साथ क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज के छात्रावास में आ गई थी । तत्कालीन आचार्या कुमारी तुलास्कर ही हमारी स्थानीय अभिभाविका थीं । वे स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों से जुड़ी थीं और विशेष अवसरों पर आनंद भवन भी जाती थीं ।

मैंने उनके साथ जाने का हठ किया । किंतु वे मुझे तभी साथ ले जाने के लिए तैयार हुईं, जब पिताजी की अनुमति मिल गई । मैं पहले-पहल आनंद भवन कब गई, यह तो मुझे याद नहीं है किंतु वहाँ की अनेक घटनाएँ मेरी स्मृति में अंकित हैं । उन्हीं में भाई जवाहर लाल के प्रथम दर्शन भी हैं।

एक दिन जैसे ही मैं कक्षा से बाहर आई, आचार्या जी को ताँगे में बैठने के लिए तैयार पाया तब छात्रावास जाकर पुस्तकें रखने और कपड़े बदलने का समय ही नहीं था। अत: उनके साथ आनंद भवन जाने की उत्सुकता में बस्ता लिए, स्कूल के कपड़ों में ही ताँगे में जा बैठी ।

वहाँ कई लोग थे । आचार्या जी उन बड़े आदमियों से क्या-क्या बातें करती रहीं, यह तो ज्ञान नहीं, क्योंकि उस समय मैं वार्ता से अधिक वहाँ के दृश्य की ओर आकर्षित थी ।

उस दिन लौटते समय न जाने किस हड़बड़ी में बस्ता वहीं छोड़कर बाहर आ गई । बरामदे की सीढ़ियों पर पहुँचते ही पीछे से सुनाई दिया— ये किताबें तुम्हारी हैं ? मुड़कर देखते ही मैं जहाँ–की–तहाँ खड़ी रह गई। बरामदे में खड़े भाई जवाहर लाल मेरे बस्ते को झुला रहे थे ।

मँझला कद, गौर वर्ण, स्वच्छ खादी के परिधान में दुबली-पतली पर सशक्त काया, चौड़ा उज्ज्वल माथा, लंबा-सा मुख, सीधी नासिका, हँसी से भरे ओंठों में चमकती दंत-पंक्ति । काली पुतलियों से युक्त आँखें न बड़ी थीं न छोटीं, किंतु उनकी दृष्टि में एक विशेषता थी । सामने खड़े व्यक्ति को ऐसा लगता था मानो वे आँखें उसके पार कुछ देख रही हों ।

बस्ते का स्वामित्व मैंने सिर हिलाकर स्वीकार किया और उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया । उन्होंने सावधानी से बस्ता मुझे थमाते हुए भृकुटियों पर बल देकर कहा, ''क्या बात है ! किताबें फेंकती घूमती हो । पढ़ती क्या खाक होंगी ?''

भाई जवाहर लाल जी के मुख से 'क्या बात है' मैंने अनेक बार अनेक अवसरों पर सुना है और हर बार उस वाक्य पर हँसी ही आई है । मोटर-दुर्घटना में मेरे पैर की हड्डी टूट जाने पर भी उन्होंने कहा, ''क्या बात है ! तुमने अपना पैर ही तुड़वा लिया ।'' मेरे कई महीनों तक अस्त-व्यस्त रहने पर भी टिप्पणी थी- 'क्या बात है, तुम अकसर बीमार हो जाती हो ।' पर पहली भेंट के दिन उनकी डाँट में, बड़े की छोटे के प्रति जो आत्मीयता थी, उसने मुझे रुला दिया । सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों में जितना कम ज्ञान होता है, उतनी ही भावुकता अधिक होती है । किसी छोटी लड़की को रुला दिया है, यह विचार ही उनके पश्चात्ताप के लिए पर्याप्त था । अत: मेरे कंधे थपथपाते हुए और किताबें सावधानी से रखने का उपदेश देते हुए, वे मुझे ताँगे तक पहुँचाने आए ।

मैंने उन्हें अनेक बार देखा–मालाओं से लदे-लदे भाषण देते, जेल जाते, घर में बड़ी मधुर आत्मीयता से कमला भाभी से बातें करते, छोटी-सी इंदिरा जी पर स्नेहिल हाथ फेरते, संपूर्ण आत्म-समर्पण के साथ बापू के चरणों में बैठते । स्वतंत्रता-संग्राम के सैनिक और सेनापति के रूप में भी उनका संपर्क सुलभ रहा और प्रयाग महिला विद्यापीठ के प्रथम कुलपति के रूप में भी । किसी भी स्थिति में उनके मानवीय रूप में कोई अंतर नहीं मिला ।

अत्यधिक शासकीय व्यस्तता में भी उनका स्नेह भरा मानवीय रूप अक्षुण्ण ही रहा । उनके प्रधानमंत्री होने के उपरांत मुझे एक विशेष काम के लिए दिल्ली जाना पड़ा । मैंने सोचा की जवाहर भाई से भी मिल लूँ ।

प्रधानमंत्री से मिलने का समय निश्चित करने का अवकाश नहीं था, अत: ऐसे ही प्रभात बेला में उनके विशाल भवन पर उपस्थित हुई । उनके निजी सचिव ने कहा, ''समय पूर्व-निश्चित किए बिना भेंट होना संभव नहीं । यहाँ तो लोग दस-दस दिन प्रतीक्षा में पड़े रहते हैं ।'' सुनते ही मेरा मन विद्रोह कर उठा । मैंने कहा, ''वह प्रधानमंत्री की व्यस्तता का प्रमाण हो सकता है, परंतु जो दस-दस दिन पड़े रहते हैं, उनके निठल्लेपन का तो निश्चित प्रमाण है ही । आप जाकर उन्हें सूचना देने का कष्ट करें कि प्रयाग से महादेवी आई हैं और उन्हें आज ही जाना है । वह उनसे मिलने की प्रतीक्षा में जीवन के दस दिन खोने की स्थिति में नहीं हैं ।''

मेरा संदेश किस रूप में पहुँचा, यह पता नहीं । किंतु शीघ्र ही भाई जवाहर लाल तेजी के साथ ज़ीने से उतरते दिखाई दिए और मेरा हाथ पकड़कर एक प्रकार से खींचते हुए ऊपर की मंजिल में ले आए ।''यहाँ बैठो, तुम्हारे लिए कॉफी आती है । इलाहाबाद के हाल-चाल बताओ ।'' वे इस प्रकार बात कहते गए कि मुझे न रुठने की याद रही, न शिकायत करने की ।

कार्यव्यस्त रहने पर भी दूसरों के विश्वास और सुविधा की चिंता करना वे शायद ही भूलते थे । मेरी स्मृति में एक और घटना प्रत्यक्ष हो जाती है । एक बार जब दद्दा मैथिलीशरण और मैं उनसे मिलने गए तब उन्होंने सहज आत्मीयता से मुझे रात में अपने साथ भोजन करने का निमंत्रण दे डाला । दद्दा विनोदी भाव से बोल उठे, ''अवश्य पंडित जी, महादेवी की इस बार शुद्‌धि कर डालिए । हम तो किसी प्रकार बच ही गए हैं, यह न बच पाए ।''

तब उन्हें स्मरण आया कि मैं तो दद्दा के समान शाकाहारी हूँ । उन्होंने पूछा, ''क्या तुम अब तक घास-पात ही खाती हो ?''प्रश्न के उत्तर में दद्दा ने सविनोद कहा, ''आप सबने हमारे लिए और छोड़ा भी क्या है ।'' इस विनोद के बीच भी वे इंदिराजी को बुलाकर अलग से शुद्‌ध शाकाहारी भोजन बनवाने की व्यवस्था करने का निर्देश देना नहीं भूले ।

रात में देखा, काँटे-छुरी तथा मांस के अनेक खाद्‌य-पदार्थों से सजी लंबी मेज के एक ओर मेरे लिए कढ़ी, चावल, शाक, दही आदि के कटोरे-कटोरियों से भरी चमचमाती थाली रखी हुई है । उन्होंने जिस प्रकार मेरी इच्छा का ध्यान रखा था, उसी प्रकार वे मेज के शिष्टाचार की ओर भी सतर्क थे । उन्होंने हँसते हुए मेरी थाली अपने पास रखवाई और उत्यंत आत्मीयता से मुझसे कहा, ''जो तुम नहीं खाती हो, उसे दूसरे को खाते देख नाक-भौं मत चढ़ाना, अच्छा !''

आम काटने की कला में उन्हें विशेष प्रवीणता प्राप्त थी, जिसका प्रदर्शन कर वे अपने अतिथियों को विस्मित कर देते थे । चाकू से कलमी आम को एक ओर से चीरकर बड़ी सफाई से उसकी गुठली बाहर निकाल देते थे, और आम साबुत-सा ही दिखाई देता था ।

व्यक्तिगत संबंधों की स्वीकृति और निर्वाह में उनके साथ तुलना में ठहरने वाले व्यक्ति बहुत ही कम हैं ।

शब्द-अर्थ

दशक - दश वर्ष की अवधि	दूसरा दशक- १९२० से १९२९ का समय
तत्कालीन - उस समय का	आचार्या - मुख्य अध्यापिका
अभिभाविका - संरक्षिका (माता-पिता के स्थान पर)	उत्सुकता - उत्सुक होने का भाव
वार्ता - बातचीत	मँझला - बीच का, न बड़ा, न छोटा
काया- शरीर	परिधान- पोशाक
नासिका - नाक	स्वामित्व - प्रभुत्व, अधिकार जताना
आत्मीयता - अपनापन	स्नेहिल - स्नेह- युक्त
कुलपति - विश्व विद्यालय के आचार्य	प्रशासकीय - प्रशासन सम्बन्धी
अक्षुण्ण- ज्यों–का–त्यों और पूरा, अखंडित	प्रत्यक्ष हो जाना - सामने आ जाना
विनोद - प्रसन्नता, परिहास	विनोदी - परिहास करने वाला, जो लोगों को हँसानेवाली बातें कहता हो,
स्वीकृति- स्वीकार कर लेना, मंजूरी	निर्वाह- बनाए रखना (संबंधों का निर्वाह)
प्रवीणता- दक्षता, कुशलता	नाक भौं चढ़ाना- अप्रसन्नता प्रकट करना

अभ्यास

बोध और विचार :

मौखिक :

१. इस पाठ की लेखिका किस समय और किसके बारे में बात कर रही हैं ?

२. पहली बार लेखिका की भेंट जवाहरलाल जी से कहाँ हुई ?

३. नेहरूजी के प्रधानमंत्री बनने के बाद लेखिका उनसे कहाँ मिलने गईं ?

४. खाने की मेज पर महादेवी वर्मा के लिए अलग भोजन क्यों परोसा गया ?

५. दद्दा शब्द का प्रयोग लेखिका ने किसके लिए किया है ?

लिखित :

१. नेहरू जी देखने में कैसे लगते थे ? अपने पठित पाठ के आधार पर लिखो ।

२. महादेवी के जवाहरलाल नेहरू संबंधी विचारों को अपने शब्दों में लिखो ।

भाषा-बोध :

१. 'अ' उपसर्ग लगाकर विपरीत शब्द बनाओ :

परिचित, निश्चित, सावधानी, स्वस्थ, सहिष्णु, सहमत, शिष्ट, संभव

२. नीचे के कोष्ठक से सही शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरो :

(महाविद्यालय, मांसाहारी, निरक्षर, ईर्ष्यालु, शासकीय, भूतपूर्व, शाकाहारी, अस्वस्थ, परिचित)

(क) जो मांस नहीं खाता हो, उसे.......................... कहते हैं ।

(ख) जो स्वस्थ न हो, उसे .... कहते हैं ।

(ग) जो शासन के संबंध में हो, उसे...................... कहते हैं ।

(घ) जो जाना- पहचाना हो, उसे......................... कहते हैं ।

(ङ) जो पढ़ा लिखा न हो, उसे........................... कहते हैं ।

(च) जो पहले हो चुका हो, उसे.......................... कहते हैं ।

(छ) जो दूसरों से ईर्ष्या करता हो, उसे.................... कहते हैं ।

(ज) जो मांस खाता हो, उसे............................. कहते हैं ।

(झ) जहाँ विद्यालय की पढ़ाई के बाद पढ़ते हैं, उसे.............. कहते हैं ।

३. नीचे लिखे शब्दों के स्त्री लिंग रूप लिखो :

अभिभावक

पुरुष

लेखक

प्रशासक

पंडित

छात्र

आचार्य

४. नीचे दिए गए शब्दों के अनुस्वार के स्थान पर पंचम वर्ण का प्रयोग करके शब्दों को फिर से लिखो :

लंबा..................	उपरांत..................	पंडित..................
कंधा..................	मंत्री..................	संपर्क..................
संबंध..................	किंतु..................	आनंद..................
संदेश..................	खंडित..................	घंटा..................

याद रखिए :

(क) क, ख , ग , घ से पूर्व आनेवाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) ङ् होता है ।

(ख) च , छ, ज , झ से पूर्व आने वाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) ञ् होता है ।

(ग) ट , ठ, ड, ढ से पूर्व आनेवाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) ण् होता है ।

(घ) त , थ, द , ध से पूर्व आनेवाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) न् होता है ।

(ङ) प , फ, ब , भ से पूर्व आनेवाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) म् होता है ।

५. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, उच्च स्वर में इन शब्दों को पढ़ो :

सैनिक, स्वतंत्रता, संग्राम, अंकित, आत्मीयता, अभिभाविका, स्थानीय, तत्कालीन, छात्रावास, पर्याप्त, संपर्क ।

अनुभव विस्तार :

१. इस लेख में 'दद्दा' जिन मैथिली शरण के लिए कहा गया है , वे थे सुप्रसिद्ध राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त । इन्हें श्रद्धा से 'दद्दा' बुलाया जाता था ।

२. महादेवी वर्मा आधुनिक युग के प्रमुख कवियों में से एक हैं । इनकी श्रेष्ठ काव्य कृति 'नीरजा', 'यामा' आदि हैं । इनके संस्मरण हृदयस्पर्शी हैं । कुछ अन्य संस्मरण भी पढ़ो ।

३. महादेवी की काव्य-पंक्तियाँ पढ़ो और याद रखो ।

बरसात की आती हवा

हरिवंश राय बच्चन

FAY61H

बरसात की आती हवा ।
वर्षा धुले आकाश से
या चंद्रमा के पास से
या बादलों की साँस से
मंद मदमाती हवा
बरसात की आती हवा ।
यह खेलती है ढाल से
ऊँचे शिखर के भाल से
आकाश से पाताल से
झकझोर लहराती हवा
बरसात की आती हवा ।
यह खेलती तरु माल से
यह खेलती हर डाल से
हरी लता के जाल से
अठखेलती इठलाती हवा
बरसात की आती हवा ।
यह शून्य से होकर प्रकट
नव हर्ष से आगे झपट
हर अंग से जाती लिपट
आनंद सरसाती हवा
बरसात की आती हवा।

शब्द-अर्थ

मदमाती - मस्त करनेवाली	शिखर - पर्वत की चोटी
भाल - मस्तक	अठखेलना- खुशी से खेलना
शून्य - एकांत	सरसाना - रसपूर्ण करना
वर्षा - बरसात, पावस	नया- नव, नवीन, नूतन
हर्ष- प्रसन्नता , उल्लास, आह्लाद	हवा - वायु, पवन, समीर

अभ्यास

भाव-बोध :

१. 'धुले आकाश' से तुम क्या समझते हो ?

२. अन्य हवाओं से बरसाती हवा कैसे भिन्न है ?

३. बरसाती-हवा किस किस से खेलती है ?

४. बरसाती हवा हमें किस तरह आनंद देती है ?

५. सही उत्तर चुनो :

'हर अंग से जाती लिपट' का तात्पर्य है :

_______ हवा शरीर के अंगों को हिला देती है ।

_______ हवा तन-मन में आनंद भर देती है ।

_______ हवा शरीर से लिपट जाती है ।

भाषा-बोध :

१. पाठित कविता से समान तुक वाले शब्द छाँट कर लिखो :

जैसे – डाल — जाल

अनुभव विस्तार :

१. केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'बसंती हवा' पढ़ो ।

२. कविता के भावानुकूल चित्र बना कर कक्षा में लगाओ ।

३. इस कविता की बार बार आवृत्ति कर के याद रखो ।

मित्रता

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

FB8235

(सर्वश्रेष्ठ निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्‌वारा रचित निबंध 'मित्रता' मानव-जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष-मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर रोशनी डालती है । एक विद्‌यार्थी के लिए अच्छे मित्रों का चुनाव करना अत्यंत आवश्यक है । उसकी सफलता या विफलता मित्रों के चुनाव पर ही निर्भर करती है । इस पाठ का उद्‌देश्य मित्रों के चुनाव में सहयोग करना है ।)

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में पड़ती है । मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है । हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरंभ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है । हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है । हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले, चाहे राक्षस बनाए, चाहे देवता ।

ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़-संकल्प हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है । पर ऐसे लोगों का साथ करना और भी बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा । दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवकों को प्राय: बहुत कम रहता है । यदि विवेक-बुद्‌धि से काम लिया जाए तो यह भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष प्राय: विवेक से कम काम लेते हैं । कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके सौ गुण-दोष को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते । वे उसमें सब बातें अच्छी-ही-अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं । हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस–यही दो चार बातें किसी में देखकर लोग चटपट उसे अपना बना लेते हैं। हम लोग यह नहीं सोचते कि मैत्री का उद्‌देश्य क्या है, क्या जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है । यह बात हमें नहीं सूझती कि यह ऐसा साधन है, जिसमें आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है । एक प्राचीन विद्‌वान का वचन है, ''विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है । जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खज़ाना मिल गया ।'' विश्वासपात्र मित्र जीवन की औषधी है । हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम

हतोत्साहित होंगे तब हमें उत्साहित करेंगे । सारांश यह है कि हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में वे हर तरह से हमारी सहायता करेंगे । सच्ची मित्रता में उत्तम बैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए ।

छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है । मित्रता हृदय से उमड़ पड़ती है ।

'सहपाठी की मित्रता'– इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है । किंतु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है, उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं । मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिसे हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे-छोटे काम ही हम निकालते जाएँ, पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें । मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें ।

मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें । हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए । ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे । मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों । प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है । दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है । राम धीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यंत प्रगाढ़ स्नेह था । उन दोनों की मित्रता खूब निभी । यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है । समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं । जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों । चिंताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का । उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था । नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था ।

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है । यह केवल नीति और सद्‌वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्‌धि का भी क्षय करता है । किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-रात अवनति के गड्‌ढ़े में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो निरंतर उन्नति की ओर ले जाएगी ।

इंगलैंड के एक विद्‌वान को युवावस्था में राज-दरबारियों में जगह नहीं मिली । इस प्रकार जिंदगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा । बहुत-से लोग तो इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते । बहुत-से लोग ऐसे होते हैं, जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्‌धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उनके ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है । बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं । इस बात को प्राय: सभी लोग जानते हैं कि भद्‌दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं । जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद करना नहीं चाहते, वे बार-बार ह्रदय में उठती और ह्रदय को बेधती हैं । अत: तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें । सावधान रहो । ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्रबल का एक ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातों को बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जाएँगे । नहीं, ऐसा नहीं होगा । जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है । धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी, पीछे तुम्हें इनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगो कि चिढ़ने की बात ही क्या है । तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले बुरे की पहचान न रह जाएगी । अंत में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे । अत: ह्रदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति की छूत से बचो । एक पुरानी कहावत है-

'' काजल की कोठरी में कैसो ही सयानो जाय ।
एक लीक काजल की लागि है पै लागि है ।।''

बुरे लोगों की संगति में जाओगे, अपने-आप को कितना भी बचाएँ- बुरा प्रभाव पड़ ही जाता है ।

शब्द-अर्थ

गुप्त - छिपाया हुआ, या छिपा हुआ, अदृश्य	आचरण- चाल-चलन
चित्त- मन, अंत: करण	अपरिमार्जित- बिना साफ किया हुआ, बिना धोया हुआ
प्रवृत्ति- मन का किसी विषय की ओर झुकाव, बहाव	अपरिपक्व- कच्चा
कुमार्ग- कुपथ,	मर्यादा- प्रतिष्ठा, परंपरा आदि द्वारा निर्धारित सीमा
निपुणता- निपुण होने का भाव या क्रिया	पथ प्रदर्शक- रास्ता दिखाने वाला
धीर- गंभीर, जो जल्दी विचलित न हो	उग्र-क्रुद्ध, भयानक
उद्धत- उग्र, प्रचंड	प्रगाढ़- बहुत गाढ़ा, घना, अत्यधिक
प्रफुल्लित- अति प्रसन्न	नीति-विशारद- नीति जाननेवाला, विद्वान
कुसंग - बुरे का संग, बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना	सद्वृत्ति - सदाचार, सद्व्यवहार
अभ्यस्त-जिसने अभ्यास किया हो	कुंठित- निराश
उज्ज्वल- चमकता हुआ, स्वच्छ, निर्मल	निष्कलंक- जिसमें कोई कलंक न हो, बेदाग

अभ्यास

बोध और विचार :

१. विश्वास पात्र मित्र को खजाना क्यों कहा गया है ?

२. कुसंग के ज्वर को सब से भयानक क्यों कहा गया है ?

३. कैसे लोगों का साथ हमारे लिए बुरा है ?

४. मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर मनुष्य जीवन की सफलता निर्भर होती है– आचार्य शुक्ल ने ऐसा क्यों कहा है ?

५. मित्र बनाते समय हमें क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

६. भिन्न प्रकृति और स्वभाव के लोगों में भी मित्रता बनी रहती है- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? उदाहरण देकर समझाओ ।

भाषा-बोध :

१. निम्नलिखित (वाक्यांश) में अनेक शब्दों के लिए एक ऐसा शब्द लिखिए जो इस पाठ में प्रयुक्त हुए हैं :

(क) जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो...........

(ख) जिसकी इच्छाएँ बहुत ऊँची हों................

(ग) जो नीति का विशेष ज्ञाता हो..................

(घ) जो शुद्ध न हो.....................

(ङ) जो साथ पढ़ता हो...............

२. नीचे लिखे शब्दों के पुंलिंग रूप लिखो :

बुरी

अच्छी

कच्ची

सच्ची

अपनी

अनुभव विस्तार :

१. अच्छे मित्र की क्या क्या विशेषताएँ होनी चाहिए ? तुम इसकी सूची बनाओ ।

२. अच्छी संगति से लाभ और बुरी संगति से हानि विषय पर कक्षा में चर्चा करो ।

३. 'मेरा मित्र' अथवा 'मेरा सहपाठी' विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

रत्नमाला

कबीर, सूर, तुलसी, रहीम

वृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर ।।
कबीरा गर्व न कीजिए, काल गहे कर केस ।
ना जानौं कित मारिहै, क्या घर क्या परदेस ।।
निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छबाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय ।।
माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय ।
भगता के पाछे फिरै, सनमुख भागै सोय ।। (कबीर)

FJ7SWA

चरण-कमल बंदौं हरि राई !
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई ।।
बहिरौ सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई ।।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बन्दौं तिहि पाई ।। (सूर)

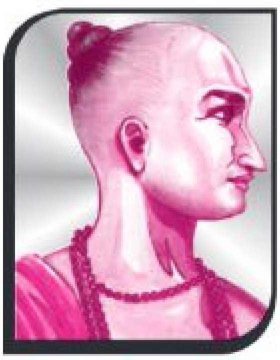

जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि-विकार ।।
सात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग ।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत संग ।।
सचिव, बैद, गुरु तीनि, जो प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज, धरम, तन तीनि कर होई बेगि ही नास ।। (तुलसी)

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरउ चटकाइ ।
टूटे से फिरि ना मिलै, मिले गाँठि परिजाइ ।।
जे गरीब पर हित करें, ते 'रहीम' बड़े लोग ।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ।।
रहिमन देखि बड़न को , लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सूई, कहा करै तरवारि ।। (रहीम)

शब्द-अर्थ

वृच्छ- वृक्ष, पेड़

भखै - खाएँ

संचै - संचय करे, जमा करे

परमारथ के कारने - दूसरों के हित के लिए या उपकार करने के लिए

साधुन धरा शरीर - साधुओं ने शरीर धारण किया है।

काल गहे कर केस - मृत्यु के हाथ में तुम्हारी चोटी है।

ना जानौं - न मालूम

निन्दक - निंदा करनेवाले , दोष निकालनेवाले

सुभाय- स्वभाव से, सहज रूप में

बिरला - कोई कोई,

भगता के - भागनेवाले ; भक्त के । (माया और छाया की एक-सी रीति है । छाया भागनेवाले के पीछे रहती है, लेकिन इसकी तरफ यदि मुँह किया जाय तो वह आगे-आगे भागती है । उसी तरह माया भक्तों के पीछे पड़ी रहती है । परन्तु भक्तों के आगे माया की कुछ नहीं चलती । लेकिन जो संसारी जीव 'माया' की यानी– धन-दौलद आदि की लालसा करता है, उसे वे प्राप्त नहीं होते । संसारी जीव हमेशा दु:खी रहता है ।

बन्दौं - वन्दना करता हूँ ।

राई - स्वामी

जाकी - जिसकी

पंगु - जो पैर से चल न सकता हो, लंगड़ा ।

लंघै - लांघता है ।

दरसाई -दिख पड़ता है ।

मूक - जो बोल नहीं सकता, गूँगा,

तिहि- उसके

पाई- पैरों की

जड़ चेतन - निर्जीव तथा सजीव संसार, मूर्ख तथा ज्ञानी

गुन- अच्छे गुण

विस्व - संसार

करतार- ईश्वर, सृष्टि कर्ता

संत हंस- संत रूपी हंस (वैसे ही संत भोग-वासना छोड़ सन्मार्ग पर चलता है । कहते हैं हंस दूध पी जाता है पानी छोड़ देता है ।)

गुन गहहि पय - सद् गुण रूपी दूध ग्रहण करता है।

परिहरि - छोड़कर

वारिविकार - पानी रूपक विकार

सात वर्ग - पुराणों में पृथ्वी के ऊपर सात लोक माने गए हैं :- १ . भूलोक (२) भुव: लोक (३) स्व:लोक (४) मह: लोक (५) जन लोक (६) तप:लोक (७) सत्यलोक । ये ही सात वर्ग हैं ।

अपवर्ग सुख - मोक्ष का सुख, जन्म -मरण का चक्कर छूट जाने पर आत्मा को जो सुख मिलता है ।

तुला इक अंग - तराजू के एक तरफ या एक पलड़े में रखकर

लव - क्षण भर

सचिव - मन्त्री, सलाह देनेवाला तथा काम-काज देखने वाला

बैद- वैद्‌य

तीनि - तीन

भय आस- भय तथा आशा के कारण

बेगि ही - जल्दी से

मत तोरउ चटकाइ - चटका कर मत तोड़ो, प्रेम बंधन मत बिगाड़ो,

टूटे से गाँठि परिजाइ- अटूट धागे को झटका देने से वह टूट जाता है । फिर मिल नहीं सकता । उसे जोड़ने से एक गाँठ पड़ जाती है । गाँठ में मिठास नहीं होती । ठीक वैसे प्रेम के धागे को विवाद का झटका लगे तो वह टूट जाता है । प्रेम भाव नष्ट हो जाता है । उसे फिर से जोड़ने पर भी मन में एक गाँठ पड़ जाती है ।

बड़ लोग- बड़े लोग, महान व्यक्ति

कहा- कहाँ, क्या

सुदामा - कुष्ण की वाल्यावस्था के सखा, जो बहुत गरीब थे। उन्हें जब मालूम हो गया कि कृष्ण द्वारिका के राजा बन गये हैं, तो पत्नी के बहुत कहने-सुनने पर तथा अपनी गरीबी से तंग आकर वे एक दिन कृष्ण के पास जा पहुँचे । कृष्ण ने उनका अत्यन्त भावभीना आदर सत्कार किया और उनका दारिद्र्य हमेशा के लिए दूर कर दिया ।

बापुरो - बेचारा, गरीब, असहाय

मिताई-जोग - मित्रता के योग्य

लघु - छोटी चीजों को, गरीब या तुच्छ व्यक्ति को

तरवारि -तलवार

अभ्यास

वोध और विचार :

१. संसार में साधु क्यों शरीर धारण करते हैं ? और कैसे ?

२. मृत्यु के बारे में कबीर के क्या विचार हैं ?

३. कबीर ने निन्दक को पास रखने के लिए क्यों कहा है ?

४. माया और छाया के बारे में कबीर ने क्या कहा है ?

५. सूर भगवान के चरण-कमल की बंदना क्यों करते हैं ?

६. तुलसी ने संत को हंस के साथ क्यों तुलना की है ?

७. सत्संग के बारे में तुलसी के विचारों को व्यक्त करो ।

८. सुई के बारे में रहीम ने क्या कहा है ?

९. प्रेम के बारे में रहीम के क्या विचार हैं ?

१०. विपत्ति की आशंका रहने पर किन-किन को प्रिय बात नहीं बोलनी चाहिए ?

११. आशय स्पष्ट करो :

(क) ना जानौं कित मारिहै, क्या घर क्या परदेश ।

(ख) बिन पानि साबुन बिना निर्मल करे सुभाय ।

(ग) जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे को सब कछु दरसाई ।

(घ) संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि विकार ।

(ङ) रहिमन धागा प्रेम का मत तोरउ चटकाई

भाषा-बोध :

(१) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो ।

साधु, हरि, शरीर, पानी

(२) पंक्तियों को पूरा करो

(क) नदी न संचै———— ।

(ख) ————- गहे कर केस ।

(ग) माया——————- एक सी ।

(घ) संत हंस गुन गहहि—— ।

(ङ) राज, धरम, ————-तीनि कर होई बेगिहिं नास ।

(च) रहिमन देखि बड़न को ——— दीजिए न डारि ।

(छ) जहाँ काम आबै————- ।

अनुभव विस्तार :

(१) क्या तुम इस प्रकार की पंक्तियों की रचना कर सकते हो ? तुम भी इस प्रकार की पंक्तियाँ रचना करने का प्रयास करो ।

(२) दोहों और पदों को समझाओ और आवृत्ति करके याद रखो ।

(३) इन महापुरुषों की वाणियों को संग्रह करके अपनी कॉपी में लिखो ।

नादान दोस्त

प्रेमचंद

केशव के घर कार्निस के ऊपर एक चिड़िया ने अंड़े दिए थे । केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़िया को वहाँ आते-जाते देखा करते । सवेरे दोनों आँखें मलते कार्निस के सामने पहुँच जाते और चिड़ा और चिड़िया दोनों को वहाँ बैठा पाते । उनको देखने में दोनों बच्चों को न मालूम क्या मजा मिलता, दूध और जलेबी की सुध भी न रहती थी । दोनों के दिल में तरह-तरह के सवाल उठते । अंडे कितने बड़े होंगे ? किस रंग के होंगे ? कितने होंगे ? क्या खाते होंगे ? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे ? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे ? घोंसला कैसा है ? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई नहीं । न अम्माँ को घर के काम-धंधों से फुरसत थी, न बाबू जी को पढ़ने-लिखने से । दोनों बच्चे आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे लिया करते थे ।

श्यामा कहती-क्यों भइया, बच्चे निकलकर फुर्र-से उड़ जाएँगे ?

केशव विद्वानों जैसे गर्व से कहता-नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे । बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे ?

श्यामा-बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी ?

केशव इस पेचीदा सवाल का जवाब कुछ न दे सकता था ।

इस तरह तीन-चार दिन गुजर गए । दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन-दिन बढ़ती जाती थी । अंडों को देखने के लिए वे अधीर हो उठते थे । उन्होंने अनुमान लगाया कि अब जरूर बच्चे निकल आए होंगे । बच्चों के चारे का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ ।

चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ पाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे ! गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे ।

इस मुसीबत का अंदाजा करके दोनों घबरा उठे । दोनों ने फैसला किया कि कार्निस पर थोड़ा-सा दाना रख दिया जाए । श्यामा खुश होकर बोली–तब तो चिड़ियों को चारे के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा न ?

केशव–नहीं, तब क्यों जाएँगी ?

श्यामा–क्यों भइया, बच्चों को धूप न लगती होगी ?

केशव का ध्यान इस तकलीफ की तरफ न गया था । बोला–जरूर तकलीफ हो रही होगी । बेचारे प्यास के मारे तड़पते होंगे । ऊपर छाया भी तो कोई नहीं ।

आखिर यही फैसला हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए । पानी की प्याली और थोड़े-से चावल रख देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया ।

दोनों बच्चे बड़े चाव से काम करने लगे । श्यामा माँ की आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लाई । केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से जमीन पर गिरा दिया और उसे खूब साफ करके उसमें पानी भरा ।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से आए ? फिर ऊपर बगैर छड़ियों के कपड़ा ठहरेगा कैसे और छड़ियाँ खड़ी होंगी कैसे ?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा । आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी । श्यामा से बोला–जाकर कूड़ा फेंकनेवाली टोकरी उठा लाओ । अम्माँ जी को मत दिखाना ।

श्यामा–वह तो बीच से फटी हुई है । उसमें से धूप न जाएगी ?

केशव ने झुँझलाकर कहा–तू टोकरी तो ला, मैं उसका सुराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा ।

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लाई । केशव ने उसके सूराख में थोड़ा-सा कागज ठूँस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला–देख, ऐसे ही घोंसले पर उसकी आड़ कर दूँगा । तब कैसे धूप जाएगी ?

श्यामा ने दिल में सोचा, भइया कितने चालाक हैं !

२

गरमी के दिन थे । बाबू जी दफ्तर गए हुए थे । अम्माँ दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थीं । लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ ? अम्माँ जी को बहलाने के लिए दोनों दम रोके, आँखें बंद किए, मौके का इंतजार कर रहे थे । ज्यों ही मालूम हुआ कि अम्माँ जी उच्छी तरह से सो गईं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाजे की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए । अंडों की हिफाजत की तैयारियाँ होने लगीं । केशव कमरे से एक स्टूल उठा लाया, लेकिन जब उससे काम न चला तो नहाने की चौकी लाकर स्टूल के नीचे रखी और डरते-डरते स्टूल पर चढ़ा ।

श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए थी । स्टूल चारों टाँगें बराबर न होने के कारण जिस तरफ ज्यादा दबाव पाता था, जरा-सा हिल जाता था । उस वक्त केशव को कितनी तकलीफ उठानी पड़ती थी, यह उसी का दिल जानता था । दोनों हाथों से कार्निस पकड़ लेता और श्यामा को दबी आवाज से डाँटता–अच्छी तरह पकड़, वरना उतरकर बहुत मारूँगा । मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर कार्निस पर था । बार-बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते ।

केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं । केशव ने देखा, कार्निस पर थोड़े तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं । जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है । श्यामा ने नीचे से पूछा-कै बच्चे हैं भइया ?

केशव – तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले ।

श्यामा– जरा हमें दिखा दो भइया, कितने बड़े हैं ?

केशव– दिखा दूँगा, पहले जरा चिथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ । बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं ।

श्यामा दौड़कर अपनी पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई । केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसकी कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे से उस पर रख दिए ।

श्यामा ने फिर कहा–हमको भी दिखा दो भइया ।

केशव – दिखा दूँगा, पहले जरा वह टोकरी तो दे दो, ऊपर छाया कर दूँ । श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली-अब तुम उतर आओ, मैं भी तो देखूँ । केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा-जा, दाना और पानी की प्याली ले आ, मैं उतर आऊँ तो तुझे दिखा दूँगा ।

श्यामा प्याली और चावल भी लाई । केशव ने टोकरी के नीचे तीनों चीजें रख दीं और आहिस्ते से उतर आया ।

श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा–अब हमको भी चढ़ा दो भइया ।

केशव– तू गिर पड़ेगी ।

श्यामा– न गिरूँगी भइया, तुम नीचे से पकड़े रहना ।

केशव– न भइया, कहीं तू गिर -गिरा पड़ी तो अम्माँ जी मेरी चटनी ही कर डालेंगी । कहेंगी कि तूने ही चढ़ाया था । क्या करेगी देखकर ? अब अंडे बड़े आराम से हैं । जब बच्चे निकलेंगे, तो उनको पालेंगे ।

दोनों चिड़ियाँ बार-बार कार्निस पर आती थीं और बगैर बैठे ही उड़ जाती थीं । केशव ने सोचा, हम लोगों के डर से नहीं बैठतीं । स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहाँ की थी, वहाँ रख दी ।

श्यामा ने आँखों में आँसू भरकर कहा–तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्माँ जी से कह दूँगी ।

केशव – अम्माँ जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ ।

श्यामा– तो तुमने मुझे दिखाया क्यों नहीं ?

केशव– और गिर पड़ती तो चार सर न हो जाते !

श्यामा – हो जाते, हो जाते । देख लेना, मैं कह दूँगी !

इतने में कोठरी का दरवाजा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा–तुम दोनों बाहर कब निकल आए ? मैंने कहा न था कि दोपहर को न निकलना ? किसने किवाड़ खोला ?

किवाड़ केशव ने खोला था, लेकिन श्यामा ने माँ से यह बात नहीं कही । उसे डर लगा कि भइया पिट जाएँगे । केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे । अंडे न दिखाए थे, इससे अब उसको श्यामा पर विश्वास न था । श्यामा सिर्फ मुहब्बत के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से, इसका फैसला नहीं किया जा सकता । शायद दोनों ही बातें थीं ।

माँ ने दोनों को डाँट-डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे-धीरे उन्हें पंखा झलने लगी । अभी सिर्फ दो बजे थे । बाहर तेज लू चल रही थी । अब दोनों बच्चों को नींद आ गई थी ।

३

चार बजे यकायक श्यामा की नींद खुली । किवाड़ खुले हुए थे । वह दौड़ी हुई कार्निस के पास आई और ऊपर की तरफ ताकने लगी । टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नजर नीचे गई और वह उलटे पाँव दौड़ती हुई कमरे में जाकर जोर से बोली–भइया, अंड़े तो नीचे पड़े हैं, बच्चे उड़ गए ।

केशव घबराकर उठा और दौड़ा हुआ बाहर आया तो क्या देखता है कि तीनों अंड़े नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई चूने की-सी चीज बाहर निकल आई है । पानी की प्याली भी एक तरफ टूटी पड़ी है ।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया । सहमी हुई आँखों से जमीन की तरफ देखने लगा । श्यामा ने पूछा - बच्चे कहाँ उड़ गए भइया ?

केशव ने करुण स्वर में कहा– अंड़े तो फूट गए ।

श्यामा – और बच्चे कहाँ गए ?

केशव– तेरे सर में । देखती नहीं है अंडों में से उजला-उजला पानी निकल आया है । वही तो दो-चार दिनों में बच्चे बन जाते ।

माँ ने सोंटी हाथ में लिए हुए पूछा– तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो ?

श्यामा ने कहा– अम्माँ जी, चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं ।

माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुस्से से बोलीं–तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा ।

अब तो श्यामा को भइया पर जरा भी तरस न आया । उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया कि वह नीचे गिर पड़े । इसकी उसे सजा मिलनी चाहिए । बोली–इन्होंने अंडों को छेड़ा था अम्माँ जी ।

माँ ने केशव से पूछा–क्यों रे ?

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा ।

माँ–तू वहाँ पहुँचा कैसे ?

श्यामा – चौकी पर स्टूल रखकर चढ़े अम्माँ जी ।

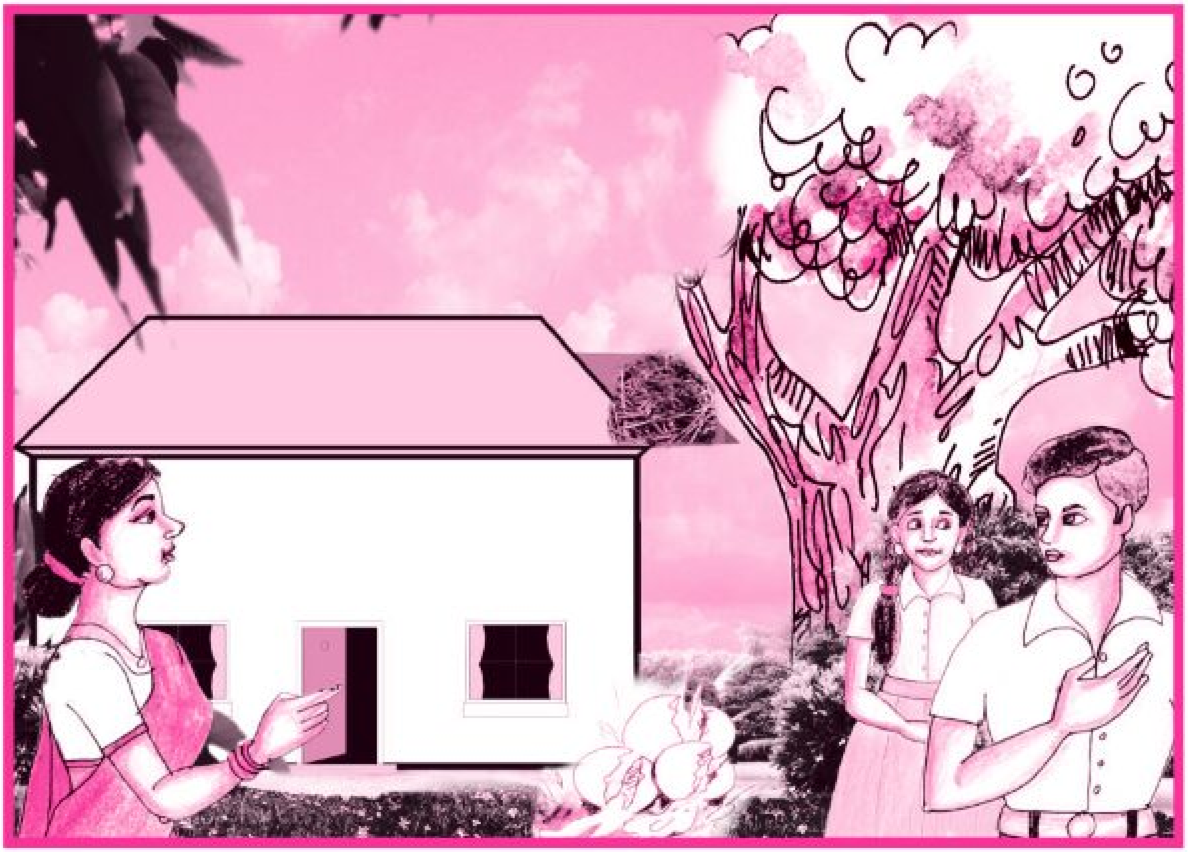

केशव – तू स्टूल थामे नहीं खड़ी थी ?

श्यामा - तुम्हीं ने तो कहा था ।

माँ– तू इतना बड़ा हुआ, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती ।

श्यामा ने डरते-डरते पूछा–तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं अम्माँ जी ?

माँ–और क्या करती ! केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा । हाय, हाय, तीन जानें ले लीं दुष्ट ने !

केशव रोनी सुरत बनाकर बोला– मैंने तो सिर्फ अंडों को गद्दी पर रख दिया था अम्माँ जी !

माँ को हँसी आ गई । मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफसोस होता रहा । अंडों की हिफाजत करने के जोश में उसने उनका सत्यानाश कर डाला । इसे याद कर वह कभी-कभी रो पड़ता था ।

दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर न दिखाई दीं ।

शब्द-अर्थ

घोंसला - घास-फूस से बना हुआ पक्षी का घर
तसल्ली - ढाढ़स
मुसीबत - कष्ट, विपत्ति
तकलीफ- दु:ख, पीड़ा
हिकमत- युक्ति, तरकीब
टोकरी- बाँस या पतली टहनियों का बना हुआ गोल और गहरा बरतन, डला
आवाज- शब्द
कसूर - दोष
घबराकर- भयभीत होकर
अफसोस - दु:ख, पश्चात्ताप
फुरसत- अवकाश, छुट्टी
जिज्ञासा- जानने की इच्छा
अंदाजा- अनुमान
फैसला - निर्णय
सूराख- छेद
टहनी- छोटी डाली
मुहब्बत- प्रेम
हिस्सेदार - सह-भागी
सहमी हुई - काफी डरी हुई
हिफाजत - रक्षा, बचाव

अभ्यास

बोध और विचार :

मौखिक :

१. प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'नादान दोस्त' रखा, आप इसे क्या शीर्षक देना चाहेंगे ?

२. केशव और श्यामा ने अंडों के बारे में क्या क्या अनुमान लगाए ? यदि उस जगह आप होते तो क्या अनुमान लगाते और क्या करते ?

३. माँ के सोते ही केशव और श्यामा दोपहर में बाहर क्यों निकल आए ?

४. माँ के पूछने पर केशव और श्यामा दोनों में से किसी ने किवाड़ खोलकर दोपहर में बाहर निकलने का कारण क्यों नहीं बताया ?

५. प्रेमचंद की कहानी 'सत्याग्रह' से नीचे एक अंश दिया गया है । आप इसे पढ़िए और उचित स्थान पर विराम चिह्न लगाओ -

उसी समय एक खोमचेवाला जाते दिखाई दिया दो बज चुके थे चारों तरफ सन्नाटा छा गया था पंडित जी ने बुलाया खोमचेवाले खोमचेवाला कहिए क्या दूँ भूख लग आई न अन्न–जल छोड़ना साधुओं

का काम है हमारा आपका नहीं मोटे राम अबे क्या कहता है यहाँ क्या किसी साधु से कम हैं चाहें तो महीने पड़े रहें और भूख न लगे तुझे तो केवल इसलिए बुलाया है कि जरा अपनी कुप्पी मुझे दे देखूँ तो वहाँ क्या रेंग रहा है मुझे भय होता है

लिखित :

१. अंडों के बारे में केशव और श्यामा के मन में किस तरह के सवाल उठते थे ?

२. केशव और श्यामा आपस में सवाल-जबाव करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दे दिया करते थे ?

३. चिड़िया के बच्चों को धूप से बचाने का उपाय किसने सोचा और उसे कैसे पूरा किया ?

४. केशव और श्यामा ने चिड़िया के अंडों की रक्षा की या नादानी ?

५. केशव ने श्यामा से चिथड़े, टोकरी और दाना-पानी मँगाकर कार्निस पर क्यों रखे थे ?

भाषा-बोध :

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जानेवाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं ।

सर्वनाम के छह भेद हैं ।

- पुरुषवाचक सर्वनाम - मैं, हम, तू, तुम, वह, उसे
- निजवाचक सर्वनाम - स्वयं, खुद, अपने-आप
- निश्चयवाचक सर्वनाम - यह, वह
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम - कुछ, कोई, किसी
- संबंधवाचक सर्वनाम - जैसा-वैसा, जो-वह, जिसे-उसे
- प्रश्नवाचक सर्वनाम - कौन, किसने, किसे, किससे, किनकी ।

आओ, हम पुरुषवाचक सर्वनाम का अभ्यास करेंगे।

बोलनेवाले , सुनने वाले तथा बातचीत में किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द को पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

- बोलनेवाला या लिखनेवाला अपने लिए प्रयोग करता है –

  मैं , मेरा, हम, हमारा, हमें ।

  इन्हें उत्तम पुरुष कहते हैं ।

- सुनने वाले या पढ़ने वाले के लिए प्रयोग किया जाता है–

  तू, तुम, तुम्हारा, तेरा, आप, आपका

  इन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं ।

- बातचीत में किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है-

  वह, वे, यह, ये, उस, उन्हें, उनको ।

  इन्हें अन्य पुरुष कहते हैं ।

नीचे दिए गएअनुच्छेद में तीनों प्रकार के पुरुषवाचक सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करो :

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा ।आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी ।श्यामा से बोला– तू जाकर कूडा फेंकने वाली टोकरी उठा ला ।अम्माजी को मत दिखाना ।वरना वह मारेंगी । श्यामा–वह तो बीच से फटी हुई है ।उसमें से धूप न जाएगी ? केशव ने झुँझलाकर कहा–तू टोकरी तो ला, मैं उसका सूराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा ।

अनुभव विस्तार :

१. इस पाठ को पढ़कर मालूम कीजिए कि दोनो चिड़ियाँ वहाँ फिर क्यों न दिखाई दीं ? वे कहाँ गई होंगी ? इसके बारे में अपने दोस्तों के साथ मिलकर बातचीत करो ।

२. इस कहानी में गर्मी के दिनों की चर्चा है ।अगर सरदी या बरसात के दिन होते तो क्या-क्या होता ? अनुमान करो और अपने मित्रों से कहो ।

३. इस तरह की एक कहानी लिखने की कोशिश करो ।

पढ़क्कू की सूझ

रामधारी सिंह 'दिनकर'

एक पढ़क्कू बड़े तेज थे, तर्क शास्त्र पढ़ते थे
जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे ।
एक रोज वे पड़े फिक्र में समझ नहीं कुछ पाए,
बैल घूमता है कोल्हू में कैसे बिना चलाए ?
कई दिनों तक रहे सोचते, मालिक बड़ा गजब है ?
सिखा बैल को रक्खा इसने, निश्चय कोई ढब है ।

आखिर, एक रोज मालिक से पूछा उसने ऐसे,
अजी, बिना देखे, लेते तुम जान भेद यह कैसे ?
कोल्हू का यह बैल तुम्हारा चलता या लड़ता है ?
रहता है घूमता, खड़ा हो या पागुर करता है ?

मालिक ने यह कहा, अजी, इसमें क्या बात बड़ी है ?
नहीं देखते क्या, गर्दन में घंटी एक पड़ी है ?
जब तक यह बजती रहती है, मैं न फिक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ ।

कहा पढ़क्कू ने सुनकर, तुम रहे सदा के कोरे !
बेवकूफ ! मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़े !
अगर किसी दिन बैल तुम्हारा सोच-समझ अड़ जाए,
चले नहीं, बस, खड़ा-खड़ा गर्दन को खूब हिलाए ।
घंटी टुन-टुन खूब बजेगी, तुम न पास आओगे,
मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे ?

मालिक थोड़ा हँसा और बोला कि पढ़क्कू जाओ,
सीखा है यह ज्ञान जहाँ पर, वहीं इसे फैलाओ ।
यहाँ सभी कुछ ठीक-ठाक है, यह केवल माया है,
बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है ।

शब्द-अर्थ

सूझ - बोध या समझने की शक्ति

फिक्र - चिंता

गजब - क्रोध, प्रकोप

बेवकूफ- मूर्ख, नासमझ

कोल्हू - बीजों का तेल या गन्ने का रस निकालने का यंत्र ।

पागुर - जुगाली, सींग वाले चौपायों का वह चर्या जिसमें वे निगले हुए चारे को गले से थोड़ा-थोड़ा निकाल कर फिर से चबाते हैं ।

ढब - ढंग, रीति

अभ्यास

भाव- बोध :

१. इस कविता में एक कहानी कही गई है । इस कहानी को तुम अपने शब्दों में लिखो ।

२. पढ़क्कू कौन-सा शास्त्र पढ़ते थे ?

३. बिना चलाए कोल्हू का बैल कहाँ चलता रहता था ?

४. कोल्हू में चलते समय बैल क्या करता था ?

५. घंटी न बजने से मालिक क्या करता था ?

६. मालिक और पढ़क्कू में से कौन ज्यादा समझदार था, बताओ ।

भाषा-बोध :

मुहावरे :

'कोल्हू का बैल' ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो कड़ी मेहनत करता है या जिससे कड़ी मेहनत करवाई जाती है । मेहनत और कोशिश से जुड़े कुछ और मुहावरे नीचे लिखे गए हैं। इनका वाक्य में प्रयोग करो ।

- दिन रात एक करना
- पसीना बहाना

गढ़ना

पढ़क्कू नई-नई बातें गढ़ते थे ।

बताओ, ये लोग क्या गढ़ते हैं ?

लुहार................

ठठेरा................

कुम्हार................

लेखक..............

कवि................

सुनार................

अपना तरीका :

हाँ जब बजती-नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ

'पूँछ धरता हूँ' का मतलब है– पूँछ पकड़ लेता हूँ।

नीचे लिखे वाक्यों को अपने शब्दों में लिखो :

(क) बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है ।

(ख) जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे ।

(ग) मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे

अनुभव विस्तार :

१. तुम पढक्कू जैसी एक कविता लिखकर सब को सुनाओ ।

२. तुम कौन-सा काम खूब मन से करना चाहते हो ?

उसके आधार पर पढ़क्कू जैसे कोई शब्द सोचो ।

ऐसे-ऐसे

विष्णु प्रभाकर

पात्र - परिचय

मोहन	:	एक विद्यार्थी
दीनानाथ	:	एक पड़ोसी
माँ	:	मोहन की माँ
पिता	:	मोहन के पिता
मास्टर	:	मोहन के मास्टर जी ।

वैद्य जी, डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन ।

FJZG28

(सड़क के किनारे एक सुंदर फ्लैट में बैठक का दृश्य । उसका एक दरवाजा सड़कवाले बरामदे में खुलता है, दूसरा अंदर के कमरे में, तीसरा रसोईघर में । अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं । एक ओर रेडियो का सेट है । दोनों ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं । बीच में कुर्सियाँ हैं । एक छोटी मेज भी है । उस पर फोन रखा है । परदा उठने पर मोहन एक तख्त पर लेटा है । आठ-नौ वर्ष की लगभग उम्र होगी उसकी । तीसरी क्लास में पढ़ता है । इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है । बार-बार पेट को पकड़ता है । उसके माता-पिता पास बैठे हैं ।)

माँ : (पुचकारकर) न-न, ऐसे मत कर ! अभी ठीक हुआ जाता है । अभी डॉक्टर को बुलाया है । ले, तब तक सेंक ले । (चादर हटाकर पेट पर बोतल रखती है । फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है ।) इसने कहीं कुछ अंट-शंट तो नहीं खा लिया ?

पिता : कहाँ ? कुछ भी नहीं । सिर्फ एक केला और एक संतरा खाया था । अरे, यह तो दफ्तर से चलने तक कूदता फिर रहा था । बस अड्डे पर आकर यकायक बोला–पिताजी, ''मेरे पेट में तो कुछ ऐसे-एसे हो रहा है ।''

माँ : कैसे ?

पिता : बस 'ऐसे-ऐसे' करता रहा । मैंने कहा–अरे, गड़गड़ होती है ? तो बोला –नहीं । फिर पूछा–चाकू-सा चूभता है ? तो जवाब दिया–नहीं । गोला-सा फूटता है ? तो बोला–नहीं । जो पूछा उसका जवाब–नहीं । बस एक ही रट लगाता रहा, कुछ 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

माँ : (हँसकर) हँसी की हँसी, दुख का दुख, यह 'ऐसे-ऐसे' क्या होता है ? कोई नयी बीमारी तो नहीं ? बेचारे का मुँह कैसे उतर गया है ! हवाइयाँ उड़ रही हैं ।

पिता : अजी, एकदम सफेद पड़ गया था । खड़ा नहीं रहा गया । बस में भी नाचता रहा-मेरे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है । 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

मोहन : (जोर से कराहकर) माँ ! ओ माँ !

माँ : न-न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं । अजी, जरा देखना, डॉक्टर क्यों नहीं आया ! इसे तो कुछ ज्यादा ही तकलीफ जान पड़ती है । यह 'ऐसे-ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है । देखो न, कैसे लोट रहा है ! जरा भी कम नहीं पड़ती । हींग, चूरन, पिपरमेंट-सब दे चुकी हूँ । वैद्य जी आ जाते ! (तभी फोन की घंटी बजती है । मोहन के पिता उठाते हैं ।)

पिता : यह ४ ३ ३ ३ २ है । जी, जी हाँ । बोल रहा हूँ... कौन ? डॉक्टर साहब ! जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है... जी नहीं, खाया तो कुछ नहीं... बस यही कह रहा है.... बस जी.... नहीं, गिरा भी नहीं... 'ऐसे-ऐसे' होता है । बस जी 'ऐसे-ऐसे' होता है । बस जी, 'ऐसे-ऐसे' ! यह 'ऐसे-ऐसे' क्या बला है, कुछ समझ में नहीं आता । जी... जी हाँ ! चेहरा एकदम सफेद हो रहा है । नाचा... नाचता फिरता है... जी नहीं, दस्त तो नहीं आया.... जी हाँ, पेशाब तो आया था... जी नहीं, रंग तो नहीं देखा । आप कहें तो अब देख लेंगे... अच्छा जी ! जरा जल्दी आइए । अच्छा जी, बड़ी कृपा है । (फोन का चोंगा रख देते हैं ।) डॉक्टर साहब चल दिए हैं । पाँच मिनट में आ जाते हैं ।

(पड़ोस के लाला दीनानाथ का प्रवेश । मोहन जोर से कराहता है ।)

मोहन : माँ... माँ...ओ... ओ... (उलटी आती है । उठकर नीचे झुकता है । माँ सिर पकड़ती है । मोहन तीन-चार बार 'ओ-ओ' करता है । थूकता है, फिर लेट जाता है ।) हाय, हाय !

माँ : (कमर सहलाती हुई) क्या हो गया ? दोपहर को भला-चंगा गया था । कुछ समझ में नहीं आता ! कैसा पड़ा है ! नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है ! हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है ।

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलजार किए रहता है । इसे छेड़, उसे पछाड़ : इसको मुक्का, उसको थप्पड़ । यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन ।

पिता : बड़ा नटखट है ।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है ! मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा !

दीनानाय : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ है, तभी तो पड़ा । मामूली तकलीफ को तो यह कुछ समझता नहीं । पर कोई डर नहीं । मैं वैद्य जी से कह आया हूँ । वे आ ही रहे हैं । ठीक कर देंगे ।

मोहन : (तेजी से कराहकर) अरे... रे-रे-रे... ओह !

माँ : (घबराकर) क्या है, बेटा ? क्या हुआ ?

मोहन : (रुआँसा-सा) बड़े जोर से ऐसे-ऐसे होता है । ऐसे–ऐसे ।

माँ : ऐसे कैसे, बेटे ? ऐसे क्या होता है ?

मोहन: ऐसे-ऐसे । (पेट दबाता है ।)

(वैद्य जी का प्रवेश ।)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन ? मैंने कहा, जय राम जी की ! कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या ? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या ?

(सब उठकर हाथ जोड़ते हैं । वैद्य जी मोहन के पास कुर्सी पर बैठ जाते हैं ।)

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था । दफ्तर से चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला-मेरे पेट में दर्द होता है । 'ऐसे-ऐसे' होता है । समझ में नहीं आता, यह कैसा दर्द है !

वैद्य जी : अभी बता देता हूँ । असल में बच्चा है । समझा नहीं पाता है । (नाड़ी दबाकर) वात का प्रकोप है... मैंने कहा, बेटा, जीभ तो दिखाओ । (मोहन जीभ निकालता है ।) कब्ज है । पेट साफ नहीं हुआ । (पेट टटोलकर) हूँ, पेट साफ नहीं है । मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है । क्यों बेटा ? (हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं ।) ऐसे-ऐसे होता है ?

मोहन : (कराहकर) जी हाँ... ओह !

वैद्य जी : (हर्ष से उछलकर) मैंने कहा न, मैं समझ गया । अभी पुड़िया भेजता हूँ । मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी-कभी बड़ों-बड़ों को छका देती है । समझने की बात है । मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी, आप ही पुड़िया ले लो । (मोहन की माँ से) आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से देनी है । दो-तीन दस्त होंगे । बस फिर 'ऐसे-ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग ! (वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं । मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं ।)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट (नोट देते हैं ।)

वैद्य जी : (नोट लेते हुए) अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं ? आप और हम क्या दो हैं ?

(अंदर के दरवाजे से जाते हैं । तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं ।)

डॉक्टर : हैलो मोहन ! क्या बात ? 'ऐसे-ऐसे' क्या कर लिया ?

(माँ और पिता जी फिर उठते हैं । मोहन कराहता है । डॉक्टर पास बेठते हैं ।)

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता ।

डॉक्टर : (पेट दबाने लगते हैं ।) अभी देखता हूँ । जीभ तो दिखाओ बेटा । (मोहन जीभ निकालता है ।) हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है ? ऐसे-ऐसे ? (मोहन बोलता नहीं, कराहता है ।)

माँ : बताओ, बेटा ! डॉक्टर साहब को समझा दो ।

मोहन : जी... जी... ऐसे-ऐसे । कुछ ऐसे-ऐसे होता है । (हाथ से बताता है । उँगलियाँ भींचता है । डॉक्टर, तबीयत तो बड़ी खराब है ।

डॉक्टर : (सहसा गंभीर होकर) वह तो मैं देख रहा हूँ । चेहरा बताता है, इसे काफी दर्द है । असल में कई तरह के दर्द चल पड़े हैं । कौलिक पेन तो है नहीं और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता । (बराबर पेट टटोलता रहता है ।)

माँ : (काँपकर) फोड़ा !

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है । बिलकुल नहीं है । (मोहन से) जरा मुँह फिर खोलना । जीभ निकालो । (मोहन जीभ निकालता है ।) हाँ, कब्ज ही लगता है । कुछ बदहजमी भी है । (उठते हुए) कोई बात नहीं । दवा भेजता हूँ । (पिता से) क्यों न आप ही चलें ! मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी । कभी-कभी हवा रुक जाती है और फंदा डाल लेती है । बस उसीकी ऐंठन है ।

(डॉक्टर जाते हैं । मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे-पीछे जाते हैं और डॉक्टर साहब को देते हैं ।)

माँ : सेंक तो दूँ, डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर : (दूर से) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए ।

(डॉक्टर जाते हैं । माँ बोतल उठाती है । पड़ोसिन आती है ।)

पड़ोसिन : क्यों मोहन की माँ, कैसा है मोहन ?

माँ : आओ जी, रामू की काकी ! कैसा क्या होता ! लोचा-लोचा फिरे है । जाने वह 'ऐसे-ऐसे' दर्द क्या है, लड़के का बुरा हाल कर दिया ।

पड़ोसनि : ना जी, इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं । देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा । राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया । नए-नए बुखार निकल आए हैं । वह बात है कि खाना-पीना तो रहा नहीं ।

माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहजमी है । आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर गया था । वहाँ भी कुछ नहीं खाया । आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है । (बाहर से आवाज आती है- 'मोहन ! मोहन !' फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है ।)

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं । (पुकारकर) आ जाइए !

मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है ! क्यों, भाई ? (पास आकर) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है । दादा, कल तो स्कूल जाना है । तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी । क्यों माता जी, आपने क्या खिला दिया था इसे ?

माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं ।

मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है । समझ गया, उसी में 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे ।

मास्टर : माता जी, मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है । इसकी 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ । अक्सर मोहन जैसे लड़कों को वह हो जाती है ।

माँ : सच ! क्या बीमारी है यह ?

मास्टर : अभी बताता हूँ । (मोहन से) अच्छा साहब ! दर्द तो दूर हो ही जाएगा । डरो मत । बेशक कल स्कूल मत आना । पर हाँ, एक बात तो बताओ, स्कूल का काम तो पूरा कर लिया है ?

(मोहन चुप रहता है ।)

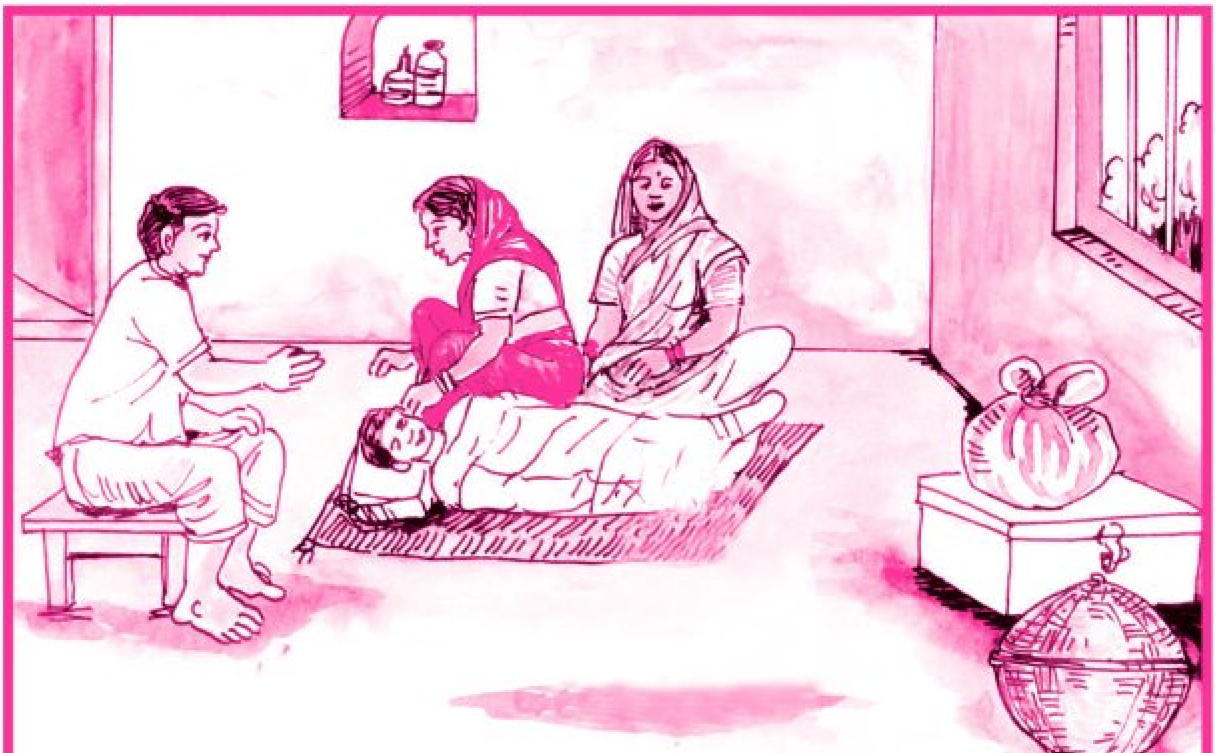

माँ : जवाब दो, बेटा, मास्टर जी क्या पूछते हैं ।

मास्टर : हाँ, बोलो बेटा ।

(मोहन कुछ देर फिर मौन रहता है । फिर इनकार में सिर हिलाता है ।)

मोहन : जी, सब नहीं हुआ ।

मास्टर : हूँ ! शायद सवाल रह गए हैं ।

मोहन : जी !

मास्टर : तो यह बात है । 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है ।

माँ : (चौंककर) क्या ?

(मोहन सहसा मुँह छिपा लेता है ।)

मास्टर : (हँसकर) कुछ नहीं, माता जी, मोहन ने महीना भर मौज की । स्कूल का काम रह गया । आज खयाल आया । बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा–'ऐसे - ऐसे' ! अच्छा, उठिए साहब ! आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है । स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी । आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा । (मोहन उसी तरह मुँह छिपाए रहता है ।) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए । उठिए, खाना मिलेगा । (मोहन उठता है । माँ ठगी-सी देखती है । दूसरी ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं ।)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है । हमारी तो जान निकल गई । पंद्रह-बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग । (पिता से) देखा जी आपने !

पिता : (चकित होकर) क्या-क्या हुआ ?

माँ : क्या-क्या होता ! यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है ।

पिता : हें !

(दवा की शीशी हाथ से छूटकर फर्श पर गिर पड़ती है । एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं फिर हँस पड़ते हैं ।)

दीनानाथ : वाह, मोहन, वाह !

पिता : वाह, बेटा जा, वाह ! तुमने तो खूब छकाया !

(एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है ।)

शब्द-अर्थ

बीमारी - रोग	सफेद - उजला
मामूली - साधारण	तकलीफ - कष्ट
तबीयत - मन, स्वास्थ्य	अक्सर - अकेला, प्राय:
फर्श - सीमेंट आदि से बनी घर या आंगन की पक्की भूमि	खयाल - याद, विचार
सवाल - प्रश्न	

अभ्यास

बोध और विचार :

१. माँ मोहन के 'ऐसे - ऐसे' कहने पर क्यों घबरा रही थी

२. ऐसे कौन-कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं ?

३. इस एकांकी में कुल कितने चरित्र हैं ? नाम लिखिए ।

४. 'एकांकी' का नाम 'ऐसे-ऐसे' क्यों रखा गया है ?

५. इस पाठ से आपको क्या लाभ हुआ और कौन-सी बात जानने को मिली ?

६. इस एकांकी के अंत में क्या होता है ?

७. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से एक-एक वाक्य बनाओ :

पीछे-पीछे, सवाल, मौज, कभी-कभी

बीमारी, मामूली, सिर्फ, तकलीफ

८. किसने कहा ? किससे कहा ?

(क) मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे - ऐसे' हो रहा है ।

....

(ख) इसने कहीं कुछ अंट-शंट तो नहीं खा लिया ?

....

(ग) हींग, चूरन, पिपरमेंट - सब दे चुकी हूँ ।

....

(घ) मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है ।

....

(ङ) मोहन की दवा वैद्य और डाक्टर के पास नहीं है ।

....

(च) तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है ।

....

(छ) वाह, बेटा जी, वाह तुमने तो खूब छकाया ।

....

९. केवल दो वाक्यों में पात्र परिचय लिखो :

(क) दीनानाथ..

(ख) माँ..

(ग) मास्टरजी..

(घ) मोहन ....

भाषा-बोध :

१. पाठ से 'ज़' और 'फ़' वाले (नुक्तेवाले) शब्द चुनकर लिखो :

'ज़' वाले शब्द	'फ़' वाले शब्द	अन्य शब्द
....	....	....
....	....	....
....	....	....

मुहावरे :

मुहावरे भाषा को रोचक बनाते हैं । किसी बात के सीधे - सीधे कहने के बदले मुहावरे में कहने से बात में रोचकता आ जाती है । जैसे – रामू ने चारों ओर देखा । रामू ने चारों ओर नजर दौडाई ।

इस पाठ में कई मुहावरे हैं ।

२. निम्नलिखित मुहावरों को तीर द्वारा उनके अर्थ से मिलाओ :

१. अंट-शंट खाना	१. अच्छा-खासा होना, स्वस्थ होना
२. गड़-गड़ होना	२. चेहरे का रंग पीला पड़ जाना
३. कूदते फिरना	३. बचपन में ही बहुत चतुर होना

४. रट लगाना	४. उधम मचाना
५. मुँह उतरना	५. फालतू-चीजें खाना
६. हवाइयाँ उड़ना	६. जाल में फँसाना
७. भला-चंगा होना	७. गरजने की आवाज होना
८. सिर पर उठाना	८. शोर - गुल मचाना
९. धमा चौकड़ी करना	९. बार-बार कहना
१०. फंदा डालना	१०. बहुत परेशान करना
११. पेट में दाढ़ी होना	११. आश्चर्य चकित रह जाना
१२. ठगे से रहना	१२. उछल कूद करना
१३. खूब छकाना	१३. मुँह पर उदासी छाना

ऊपर दिए गए किन्हीं पाँच मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

१...

२...

३...

४...

५...

वाक्यज्ञान :

वाक्य का प्रयोग किसी न किसी उद्देश्य से होता है । वाक्य के द्वारा हम आज्ञा देते हैं । प्रार्थना करते हैं, इच्छा प्रकट करते हैं, आश्चर्य प्रकट करते हैं, प्रश्न पूछते हैं और कभी स्पष्ट रूप से मना कर देते हैं । इन आधारों पर वाक्य के छह भेद किए गए हैं । इन भेदों को अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद कहते हैं ।

अर्थ के आधार पर वाक्य के छह भेद हैं-

१. विधानवाचक वाक्य - (सामान्य कथन) जैसे –होली मार्च में मनाई जाती है
२. निषेधात्मक वाक्य - (नहीं का बोध) जैसे–मैं कल स्कूल नहीं जाऊँगा ।
३. आज्ञार्थक वाक्य- (आदेश, आज्ञा देना) जैसे– मोहन को बुलाओ।
४. विस्मयादिबोधक वाक्य - (आश्चर्य, इच्छा, संदेह, हर्ष) जैसे– अहा ! कितना सुन्दर दृश्य है !
५. प्रश्नवाचक वाक्य - (प्रश्न पूछने का बोध) जैसे –तुम्हारा नाम क्या है ?
६. संकेतात्मक वाक्य- (एक काम का दूसरे पर निर्भर होना) जैसे–यदि धूप निकलती तो कपड़े सूखते ।

३. निम्नलिखित वाक्य को संकेतानुसार लिखो :

मोहन स्कूल जाएगा

१. मना करना / निषेधात्मक वाक्य............................

२. प्रश्न पूछना / प्रश्नवाचक वाक्य............................

३. आज्ञा देना / आज्ञार्थक वाक्य ....

४. नीचे दिए गए वाक्यों का अर्थ के आधार पर भेद लिखो :

१. मैं काम करता तो अध्यापक को दिखाता (....................)

२. तुम्हें पढ़ना नहीं आता । (....................)

३. एक गिलास पानी लाओ । (....................)

४. भगवान तुम्हारी यात्रा सफल करें । (....................)

५. रविवार को छुट्टी होती है । (....................)

६. तुम क्या कर रहे हो ? (....................)

अनुभव विस्तार :

१. सड़क के किनारे एक सुन्दर फ्लैट में बैठक का दृश्य । उसका एक दरवाजा सड़कवाले बरामदे में खुलता है। उस पर एक फोन रखा है ।

इस बैठक की पूरी तस्वीर बनाओ !

२. यदि तुम मोहन के स्थान पर होते तो और क्या क्या बहाने बनाते ?

....

३. बच्चे स्कूल का काम नहीं करते । वे मास्टरजी से बचने के लिए क्या-क्या बहाने बनाते हैं ?

मैं सब से छोटी होऊँ

सुमित्रानंदन पंत

मैं सबसे छोटी होऊँ,
तेरी गोदी में सोऊँ,
तेरा अंचल पकड़-पकड़कर
फिरूँ सदा माँ ! तेरे साथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ !
बड़ा बनाकर पहले हमको
तू पीछे छलती है मात !
हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात !

FK9C3V

अपने कर से खिला धुला मुख,
धूल पोंछ, सज्जित कर गात,
थमा खिलौने, नहीं सुनाती
हमें सुखद परियों की बात !

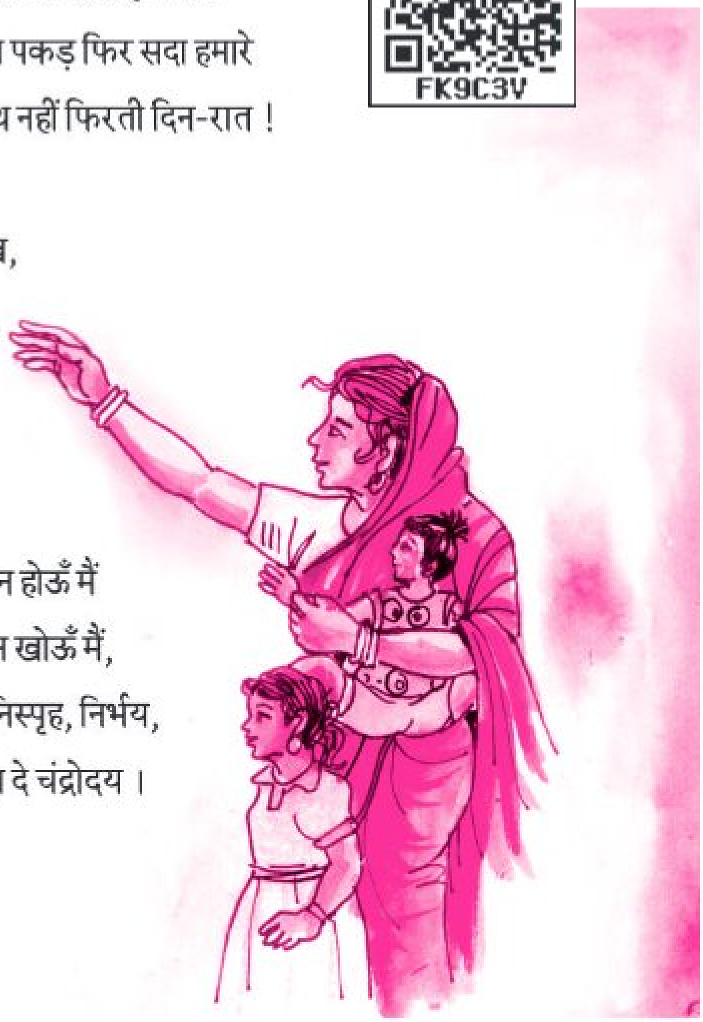

ऐसी बड़ी न होऊँ मैं
तेरा स्नेह न खोऊँ मैं,
छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय,
कहूँ-दिखा दे चंद्रोदय ।

शब्द-अर्थ

निस्पृह - जिसे किसी प्रकार की इच्छा या कामना न हो, निर्लोभ ।

निर्भय - भयशून्य ।

अभ्यास

भाव बोध :

१. कविता में सब से छोटे होने की कल्पना क्यों की गई है ?

२. कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' क्यों कहा गया है ?
क्या तुम भी हमेशा छोटे बने रहना पसंद करोगे ? क्यों ?

३. इसका अर्थ स्पष्ट करो :
'' हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात !''

४. अपने छुटपन में बच्चे अपनी माँ के बहुत करीब होते हैं ।
इस कविता में नजदीकी की कौन -कौन सी स्थितियाँ बताई गई हैं ।

५. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाओ :

(क) बालिका माँ का आँचल पकड़कर घूमना चाहती है, क्योंकि

i. वह बड़ी होने से डरती है ।
ii. उसे अकेले घूमने से डर लगता है ।
iii. वह सदा माँ का साथ चाहती है ।
iv. वह माँ का हाथ छोड़ते ही गिर पड़ती है ।

(ख) बच्चों के छोटे रहने पर माँ किसकी कहानी सुनाती है ?

i. जानवरों की
ii. भूत-प्रेतों की
iii. परियों की
iv. प्रकृति की

(ग) छोटी बच्ची को बड़ी बनाकर माँ क्या करती है ?

i. छोड़ देती है

ii. छलती है

iii. पीटती है

iv. साथ नहीं रखती है

६. कविता पढ़कर लिखो कि बालिका अपनी माँ से क्या–क्या चाहती है ?

भाषा-बोध :

१. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :

मुख - ....

रात - ....

स्नेह - ....

दिन - ....

२. 'दिन-रात' एक दूसरे के विलोम (उलटे अर्थ वाले) शब्द हैं । उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखकर वाक्य बनाओ -

उदाहरण -	अपना - पराया	पराया धन छूना पाप है ।
	छाया -	....
	सुखद -	....
	स्नेह -	....
	छोड़ना	....
	छोटी -	....

कविता से :

१. यह क्यों कहा गया है कि बड़ा बनाकर माँ बच्चे को छलती है ?

२. तुम्हारी माँ तुम लोगों के लिए क्या क्या काम करती है ?

अनुभव विस्तार :

१. इस कविता में माँ अपना एक दिन कैसे गुजारती है ? सोचो और लिखो ।

२. चाँद के उदित होने की कल्पना करो और अपनी कक्षा में बताओ ।

३. ऐसी एक कविता लिखने की कोशिश करो और लिखने के बाद सब को सुनाओ ।

उत्कलमणि

FKI85I

संकलित

ओड़िशा प्रान्त में पुरी जिलान्तर्गत साक्षिगोपाल से कोई ८ किलोमीटर दूर भार्गवी नदी के तट पर स्थित सुआण्डो नामक गाँव में ९ अक्तूबर १८७७ ई० को एक बालक का जन्म हुआ । उसके पिता का नाम दैतारि दास था और माता का नाम स्वर्णमयी। 'होनहार वीरवान के होत चीकने पात' कहावत के अनुसार बचपन से ही यह बालक बड़ा होनहार था । नियति ने बचपन में ही इस बालक को मातृ सुख से बंचित कर दिया । उसकी बाल विधवा बुआ कमला पितृगृह में रहती थीं । उन्होंने इस मातृहीन शिशु गोपबंधु का लालन-पालन किया ।

जब कभी बालक गोपबंधु को अपनी माता की याद आती, वह गाँव के समीप बहने वाली भार्गवी नदी के किनारे चला जाता । वहाँ के शान्त वातावरण में अकेला बैठा प्राकृतिक सुषमा में खो जाता । उसे अपनी माँ प्रकृति की गोद में साक्षात् बैठी नजर आती थी । वह नदी ही उस बालक की माँ बन गयी थी ।

गाँव की चटसार में गोपबंधु की शिक्षा आरंभ हुई । वे सबसे पहले चटसार में पहुँच जाया करते थे । एक दिन की बात है– दूसरे लड़कों के साथ मिलकर गोपबंधु ने किसी के बगीचे से नारियल चुराया था । दूसरे दिन मालिक ने गुरुजी से शिकायत की । दण्ड के डर से सब साफ इनकार कर गये, पर गोपबंधु ने सारी बात सच-सच बता दी । गुरुजी ने उनकी सत्यनिष्ठा की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

फिर पिताजी के द्वारा स्थापित गाँव के उच्च प्राथमिक विद्यालय में उन्होंने पढ़ा । सुआण्डो से ८ किलोमीटर दूर रूपदेईपुर के मध्य ओड़िआ विद्यालय से वे एक कृती छात्र के रूप में उत्तीर्ण हुए। उन्हें छात्रवृत्ति मिली । इसके बाद पुरी जिला स्कूल में उन्होंने प्रवेश लिया । यहाँ उच्च कोटि के छात्र वक्ता के रूप में उनकी ख्याति थी । स्कूल में उनकी वेशभूषा साधारण थी, व्यवहार निष्कपट

था, विचार स्वतंत्र थे । जहाँ लोग पाश्चात्य सभ्यता एवं रीति-नीति का अनुकरण करने में गौरव मानते थे, वहीं गोपबंधु वेशभूषा, रीति-नीति, चाल-चलन में अपनी राष्ट्रीय परम्परा का तनिक भी त्याग करना नहीं चाहते थे । वे अपने गाँव की बुनी 'कलापाहाड़ी' धोती पहनते थे तथा चद्दर डालकर स्कूल जाते थे । उन्होंने शिखा भी रखी थी । इसमें वे

गौरव का अनुभव करते थे । १८९८ ई० में उन्होंने एण्ट्रैंस की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की । उन्हें दस रुपये की मासिक छात्रवृत्ति मिली और वे रेवेंशा कॉलेज में पढ़ने आए । छात्रावास में वे हरिहरदास जी के साथ एक ही कमरे में रहते थे । दोनों में खुलकर भारत की विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श होता था । इसी समय से वे ओड़िआ में देशप्रेम पर कविताएँ भी लिखने लगे थे । १९०२ ई० में उन्होंने बी०ए० की परीक्षा दी, किन्तु देशसेवा के कार्यों में व्यस्तता एवं पिताजी के देहावसान के कारण वे परीक्षा में असफल रहे । दूसरे साल १९०३ ई० में उत्तीर्ण हुए । १९०५ ई० में वे कानून पढ़ने के लिए कोलकाता गये । वहाँ वे प्रतिदिन गंगा स्नान के लिए जाते थे । पहले की तरह ही कोलकाता में भी वे 'कलापाहाड़ी' धोती पहनते और चद्दर का प्रयोग करते थे । उनके साथी यद्यपि उनकी वेशभूषा, चाल-चलन को पसन्द न करते, पर उनकी स्वदेशी भावना की कदर करते थे । १९०६ ई० में उन्होंने बी० एल० की परीक्षा पास की ।

वकील के रूप में एक स्वतंत्र पेशा अपनाने के बाद भी, उन्होंने शिक्षक जीवन का आदर्श स्वीकार किया। अंग्रेजी शासन में पराधीन होकर भी उन्होंने नवीन शिक्षा पद्धति का श्रीगणेश किया । खुले आकाश तले, मौलश्री की छाया में वर्तमान 'शान्तिनिकेतन' की तरह, उन्होंने प्रकृति की गोद में १९०९ ई० आश्विन मास की पूर्णिमा के दिन एक मिडिल अंग्रेजी स्कूल की स्थापना वकुल वन में 'सत्यवादी वन विद्यालय' के नाम से की । वहाँ शिक्षकों एवं विद्यार्थियों सभी को स्वतंत्रता का बोध होता था । पहले वे अकेले शिक्षक थे, बाद में पं० नीलकण्ठ दास, गोदावरीश मिश्र, हरिहर दास, कृपासिंधु मिश्र ने भी उनके साथ अध्यापन किया । इस राष्ट्रीय विद्यालय को देखकर महात्मागांधी, सर आशुतोष मुखर्जी, दीनबंधु

ऐण्ड्रूज आदि ने भी सन्तोष व्यक्त किया था । यहाँ विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ खेती, कपड़ा बुनना, बढ़ईगिरि, संगीत जैसी शिल्प-कलाओं की भी शिक्षा मिलती थी । मूलत: विद्यालय का उद्देश्य देश भक्त एवं कुशल नागरिक के रूप में स्वावलम्बी छात्रों को तैयार करना था ।

इस विद्यालय का नाम और काम पूरे देश में चर्चा का विषय बन गया था । लोग यहाँ के छात्रों को कर्मठ, निष्ठावान, चरित्रवान, वाक्पटु और देशसेवक मानते थे तथा उनमें विश्वास करते थे ।

पराधीनता के उस युग में ओड़िशा प्रान्त के जन-जीवन को सँवारने वाला, देशप्रेम, स्वाधीनता, स्वदेशी प्रेम एवं आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाने वाला तथा दीन-हीन, उपेक्षित मनुष्यों को गले लगाने वाला वह मसीहा कौन था ? इस सवाल को यदि एक गरीब से पूछा जाय तो वह उन्हें 'भगवान' बताएगा, एक नौजवान उन्हें सच्चा साथी साबित करेगा एवं एक बूढ़ा उन्हें अन्धेरे की रोशनी कहेगा तथा सारा ओड़िशा प्रदेश उन्हें 'उत्कलमणि' कहकर अभिनन्दन करता दिखाई देगा ।

गोपबंधु ने ओड़िशा के सामाजिक एवं राजनैतिक परिवेश को साफ सुथरा बनाया । उन्होंने लोगों को स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया ।

साहित्य रचना में गोपबंधु की विशेष रुचि थी । उन्होंने 'कारा कविता', 'अवकाश चिन्ता', 'बन्दीर आत्मकथा' आदि रचनाएँ की हैं । इनमें देशप्रेम का परिचय मिलता है । उन्होंने 'समाज' नाम से एक साप्ताहिक पत्र निकाला था जो आज ओड़िशा का प्रिय दैनिक समाचार पत्र बन गया है ।

'उत्कलमणि' की अभिलाषा पूर्णांग स्वतंत्र उत्कल प्रदेश देखने की थी, जो पूरी नहीं हो सकी । बाढ़पीड़ितों की सेवा करते-करते वे अस्वस्थ होकर घर लौटे, किन्तु ओड़िशा के स्वतंत्र प्रदेश बनने से पहले, १७ जून १९२८ ई० को अपराह्न ४ बजे उनके प्राण-पंखेरू उड़ गये।

यद्यपि गोपबंधु आज नहीं हैं–तथापि उनकी कीर्ति–पताका ओड़िशा ही नहीं,बल्कि समूचे देश के गौरव को बढ़ाने वाली स्वतंत्रता की अमिट निशानी बनकर आज भी फहरा रही है ।

शब्द-अर्थ

होनहार - आगे होने वाला

होनहार वीरवान के होत चीकने पात - बड़ा होने का लक्षण बचपन से दिखाई पड़ता है ।

नियति - भाग्य

सुषमा - सुन्दरता

चटसार - प्रारंभिक शिक्षा का स्थान, चटसाल

गौरव - गर्व

श्रीगणेश करना - प्रारंभ करना

कुशल - योग्य, पटु

उपेक्षित - तिरस्कृत

स्वावलम्बन - आत्मनिर्भरता

अभिनन्दन - सम्मान देना

कीर्त्ति - पताका - नाम, गुणों का प्रचार प्रसार

मातृसुख - माँ का सुख

खो जाना - डूब जाना

कृती- उन्नत, अच्छे

पद्धति - प्रणाली

तले - नीचे

दीन -हीन - गरीव, तुच्छ

गले लगाना - प्यार करना

मसीहा - देवदूत

प्राण-पंखेरू उड़ जाना - मर जाना

अभ्यास

बोध-विचार :

१. उत्कलमणि का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

२. उत्कलमणि को माँ की याद आने पर वे क्या करते थे ?

३. गोपबंधु की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ हुई थी ?

४. गोपबंधु-किस जीवन को आदर्श मानते थे ?

५. अंग्रेजी शासन-काल में गोपबंधु ने क्या किया था ?

६. गोपबंधु ने विद्यालय की स्थापना कहाँ की और उस विद्यालय का उद्देश्य क्या था ।

७. वन विद्यालय में कौन-कौन शिक्षक थे ?

८. गोपबंधु की लिखी तीन रचनाओं के नाम लिखो ?

९. गोपबंधु की कौन सी इच्छा पूरी नहीं हुई ?

भाषा-बोध :

१. रिक्त स्थान भरो :

क. गोपबंधु के पिता का नाम ———–– था ।

ख. गुरुजी ने उनकी ———— की भूरी-भूरी प्रशंसा की ।

ग. स्कूल में गोपबंधु की ——— साधारण थी ।

घ. शिक्षक और विद्यार्थियों सभी को ———– का बोध होता था ।

ङ. गोपबंधु की———- में विशेष रुचि थी ।

२. नीचे कुछ मुहावरे दिए गए हैं, उनके अर्थ लिखो :

मुहावरे

क. श्री गणेश करना

ख. अंधेरे की रोशनी

ग. प्राण-पंखेरू उड़ जाना

घ. गले लगाना

३. नीचे लिखे शब्दों के लिंग बताओ :

याद, पत्नी, गाँव, नदी, बालक, कीर्ति, अभिलाषा, मसीहा, जीवन, पूर्णिमा

४. नीचे दिये गये शब्दों के विपरीत अर्थवाले शब्द लिखो :

गरीब, स्वतंत्र, जन्म, पराधीन, नवीन

५. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :

नदी, जगत, बालक, दिन, रात, विद्यालय

६. निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक-एक शब्द लिखो :

क. जहाँ पाठ पढ़ने जाते हैं...........................

ख. जो दूसरों के अधीन हो...........................

ग. जो देश से प्रेम करता हो.........................

विशेषण :

संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं । इसके चार भेद हैं :

१. गुणवाचक विशेषण - नया, भारी, कामचोर आदि

२. संख्यावाचक विशेषण - दो लड़कियाँ, काफी रुपये, तीन किताबें

३. परिमाणवाचक विशेषण- थोड़ी चीनी, सात लीटर दूध आदि

४. सार्वनामिक विशेषण - यह पुस्तक, वह दुकानदार, उसका स्कूल आदि

७. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो और विशेषण शब्दों को रेखांकित करो :

क. होनहार वीरवान के होत चीकने पात।

ख. विधवा बुआ कमला पितृगृह में रहती थी ।

ग. उन्हें दस रुपये की मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी ।

घ. वह नदी ही उनकी माँ बन गयी थी ।

८. अपने लिए चार विशेषण शब्द लिखो ।

....

....

....

....

९. नीचे लिखे शब्दों में 'अ' उपसर्ग जोड़ो :

(उपसर्ग लगाने से शब्द के अर्थ बदल जाते हैं)

जैसे -	स्वस्थ	अस्वस्थ
	सम्मान	....
	बोध	....
	साधारण	....
	विचार	....

१०. उपसर्ग जोड़कर ऐसे दस शब्द बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो :

अनुभव विस्तार :

१. ऐसे एक महापुरुष की जीवनी लिखो ।

२. इस पाठ से जो शिक्षा मिली, उसे दूसरों को बताओ ।

पुष्प की अभिलाषा

पं. माखनलाल चतुर्वेदी

FKS476

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर 'हे हरि !' डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठला ऊँ ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक ।

(यह देशप्रेम की कविता है । कवि ने पुष्प के माध्यम से मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पण की भावना को व्यक्त किया है । देश के लिए जीवन का बलिदान देनेवाले वीरों के सम्मान में पुष्प उनके रास्ते पर बिछ जाना चाहते हैं ।)

शब्द-अर्थ

अभिलाषा - इच्छा

सुरबाला - अप्सरा

वनमाली - वन के माली

बिंध - छेद, चुभाना

मातृभूमि - धरती माँ

चाह - इच्छा

इठलाना - इतराना, घमंड करना

पथ - रास्ता

शव- मृत शरीर

अभ्यास

भाव-बोध :

मौखिक :

१. इस कविता का मुख्य भाव क्या है ?

२. पुष्प ने वनमाली से क्या कहा और क्यों ?

३. पुष्प की क्या अभिलाषा है ?

४. आपकी अभिलाषा क्या है ?

६. लड़ाई के अलावा आप किस प्रकार देश-सेवा में अपना योगदान दे सकते हैं ?

लिखित :

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव समझाओ :

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक ।

२. 'प्यारी को ललचाऊँ' से कवि का क्या अभिप्राय है ? लिखो ।

३. सही उत्तर चुनिए और (✓) चिह्न लगाओ :

पुष्प वीरों के मार्ग पर फेंका जाना चाहता है, क्योंकि

–उसे पथ पर बिछना अच्छा लगता है ।

– वह वीर लोगों के प्रति आकर्षित है।

– वीरों के सम्मान में शहीद होने को ही वह अपने जीवन की सार्थकता समझता है ।

– वीरों को वीर-गति दिलाने में अपने को धन्य समझता है ।

भाषा-बोध :

१. नीचे लिखे शब्दों से एक-एक वाक्य बनाओ :

पुष्प, भाग्य, सुर बाला, हरि

२. नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो :

चाह, पुष्प, देव, पथ, भूमि

अनुभव विस्तार :

१. कवि की पठित कविता देशप्रेम से संबंधित है ।

देशप्रेम से ओत-प्रोत इनकी कुछ अन्य रचनाएँ पढो ।

२. देश प्रेम से संबंधित ऐसी एक कविता लिखने की कोशिश करो :

३. इस कविता को कंठस्थ करो और उसे दूसरों को सुनाओ ।

एक पत्र देशवासियों के नाम

अशफाक

१६ सितंबर, १९२७

फैजाबाद जेल

मेरे प्यारे देशवासियो,

भारत माता को आजाद करवाने के लिए रंगमंच पर हम अपनी भूमिका अदा कर चुके हैं । गलत किया या सही, हमने जो भी किया, स्वतंत्रता पाने की भावना से प्रेरित होकर किया । हमारे अपने निंदा करें या प्रशंसा, लेकिन हमारे दुश्मनों तक को हमारी हिम्मत और वीरता की प्रशंसा करनी पड़ी है । कुछ लोग कहते हैं कि हमने गुलामी को न सहा और देश में आतंकवाद फैलाना चाहा, पर यह सब गलत है । हमारे कितने ही साथी आज भी आजाद हैं, फिर भी हमारे किसी साथी ने कभी भी किसी नुकसान पहुँचाने वाले तक पर गोली नहीं चलाई । यह हमारा उद्देश्य नहीं था । हम तो आजादी हासिल करने के लिए देश भर में क्रांति लाना चाहते थे ।

सरकार भी अंग्रेजों की और जज भी अंग्रेजों के, फिर न्याय की माँग किससे करें ! जजों ने हमें निर्दयी, बर्बर, मानवता पर कलंक आदि विशेषणों से पुकारा है । हमारे शासकों की कौम के जनरल डायर ने निहत्थों पर गोलियाँ चलवाईं । बच्चों, बूढ़ों, स्त्री-पुरुषों– सब पर दनादन गोलियाँ दागी गईं । तब इंसाफ के इन ठेकेदारों ने अपने भाई-बंधुओं को किन विशेषणों से संबोधित किया था ! फिर हमारे साथ ही यह सलूक क्यों ?

हिंदुस्तानी भाइयो ! आप चाहे किसी भी धर्म या संप्रदाय के मानने वाले हों, देश के काम में साथ रहो । आपस में व्यर्थ न लड़ो । रास्ते चाहे अलग हों, लेकिन उद्देश्य तो सबका एक है । सभी कार्य एक ही उद्देश्य की पूर्ति के साधन हैं । एक होकर देश की नौकरशाही का मुकाबला करो । अपने देश को आजाद कराओ ।

देश के सात करोड़ मुसलमानों में मैं पहला मुसलमान हूँ जो देश की आजादी के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूँ, यह सोचकर मुझे गर्व महसूस होता है ।

सभी को मेरा सलाम । हिंदुस्तान आजाद हो । सब खुश रहें ।

आपका भाई,

अशफ़ाक

फाँसी के तख्ते पर चढ़ने से तीन दिन पहले अशफाक उल्ला खान ने यह पत्र लिखा । फाँसी के तख्ते पर चढ़ते हुए वे जोर से बोले, ''मैंने कभी किसी आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रंगे । मेरा इंसाफ खुदा के सामने होगा ।''

शब्द-अर्थ

रंगमंच - अभिनय स्थल
आतंक - भय, उपद्रव
कलंक - दोष, लांछन
कौम - जाति, वंश
संप्रदाय - पंथ, मार्ग, कोई विशेष मत
भूमिका - योगदान, शुरुआत
बर्बर - क्रूर
शासक - शासन करनेवाला
निहत्था - बिना हथियार के

अभ्यास

बोध-विचार :

१. अंग्रेज भी स्वतंत्रता सेनानियों की प्रशंसा क्यों करते थे ?

२. यह पत्र इतिहास की किस घटना की ओर संकेत करता है ?

३. अंग्रेजों ने स्वतंत्रता सेनानियों को क्या कह कर पुकारा ?

४. अशफाक को किस बात का गर्व था ?

५. फाँसी पर चढ़ते हुए उन्होंने क्या कहा ? और क्यों ?

भाषा-ज्ञान :

१. नीचे दिये गये शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ :

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
उतार	उतराई
धो	....
सींच	....
चढ़	....
पढ़	....

२. नीचे लिखे शब्दों के सही उच्चारण करो :

स्वतंत्रता , तख़्ता, क्रांति, बर्बर, शासक, उद्देश्य

मूल शब्द से बने अन्य शब्दों को जानो :

मूलशब्द –सेना -

उससे बने शब्द –सैनिक, सेनापति, सेनानी, सेनाध्यक्ष

३. कुछ मूल शब्द नीचे दिये गये हैं । उनसे बने अन्य शब्दों को लिखो :

तंत्र, भाव, शासन

४. 'उत्साह' में 'ई' प्रत्यय जुड़कर 'उत्साही' बना है । नीचे लिखे शब्दों में इसी प्रकार 'ई' प्रत्यय जोड़कर नये शब्द बनाओ :

विरोध, आजाद, दुश्मन, जिम्मेदार, गुलाम, विद्रोह

५. रिक्त स्थान भरो :

क. आपस में —————– न लड़ो ।

ख. अपने देश को ———- कराओ ।

ग. एक होकर देश की नौकरशाही का ——- करो ।

घ. हम तो आजादी ——- करने के लिए ——— में क्रांति लाना चाहते थे ।

ङ. मेरा इंसाफ——– के सामने होगा ।

अनुभव विस्तार :

१. ऐसा ही एक पत्र अपने मित्र को लिखो । नीचे रूप-रेखा दी जा रही है उसे लिख कर पूरा करो :

२०५, निराला नगर
लखनऊ
१५ अप्रेल - २००८

प्रिय मित्र रमेश,

नमस्कार ।

....

....

....

....

....

तुम्हारा मित्र,
कैलास

झाँसी की रानी

सुभद्रा कुमारी चौहान

FLAVAG

सिंहासन हिल उठे, राज वंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी ।
बुंदेले हर बोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद जबानी थीं ।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार ;

महाराष्ट्र - कुल- देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी ।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खुब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राज महल में बजी बधाई खुशियाँ छाईं झाँसी में
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी ।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ में लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,

जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी ।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवर सिंह , सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती,
उनकी जो कुरबानी थी ।
बुंदेल हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

शब्द-अर्थ

मर्दानी - वीरोचित

खिलवार - खेल, क्रीड़ा

चिनगारी - आग

कुरबानी-बलिदान

पुलकित - गद् गद्, जिसे हर्ष के आवेग में पुलक हुआ हो ।

विरुदावली - गुणावली

उकसाना - ऊपर उठाना, उभाड़ना

अभ्यास

भाव बोध :

१. कानपुर के नाना की प्यारी बहन का क्या नाम था ?

२. लक्ष्मीबाई बचपन में कौन-कौन से खेल खेलती थीं ?

३. लक्ष्मी बाई के झाँसी आने पर उनका स्वागत कैसे किया गया ?

४. स्वतंत्रता-संग्राम में लक्ष्मी बाई के साथ और कौन -कौन वीर शामिल थे ?

५. राज महल में लक्ष्मीबाई का स्वागत कैसे किया गया ?

६. इस कविता से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?

७. निम्नलिखित पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट करो :

क. दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठानी थी ।

ख. बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी ।

ग. लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार ।।

घ. हुई वीरता के वैभव के साथ सगाई झाँसी में ।

ङ. महलों ने दी आग झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी ।

च. सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उनके प्रिय खिलवार ।

३. 'झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई' के अँग्रेजों के बिरुद्ध युद्ध करने और वीरगति को प्राप्त करने तक की घटनाओं को अपने शब्दों मे लिखो ।

४. नीचे दिये गये वाक्यों को पढ़ो और विशेषण शब्द छाँट कर उनके भेद का नाम लिखो ।

क. बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी ।

....

ख. नकली युद्ध व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार ।

....

ग. सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में ।

....

भाषा-बोध :

नीचे लिखे वाक्यांशों को पढ़ो :

तलवारों के वार

आजादी की कीमत

मुँह बोली बहन का नाम

इन वाक्यों में का, के, की दो शब्दों का संबंध बता रहे हैं। का, के, की संबंध कारक के विभक्ति चिह्न हैं। कारक आठ प्रकार के हैं -

कारक	विभक्ति चिह्न	पहचान	उदाहरण
कर्ता	ने	क्रिया को करने वाला	राम ने रोटी खायी।
कर्म	को	जिस पर क्रिया का फल पड़े	हरि राम को बुलाता है ।
करण	से, के द्वारा	क्रिया का साधन	सीता बस से गई है ।
संप्रदान	को, के लिए	जिसके लिए क्रिया की जाए	गगन के लिए फल लाओ।
अपादान	से	अलग होने के अर्थ में	पेड़ से पत्ता गिरा।
संबंध	का, के, की	संबंध सूचित करना	राम के दो पुत्र गये थे ।
अधिकरण	में, पर	क्रिया के होने का स्थान	राम मेज पर बैठा है ।
संबोधन	ऐ, हे, अरे	संज्ञा को पुकारने में	ऐ लड़के, इधर आ ।

१. नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं । उन में का, के, की का प्रयोग करो :

कश्मीर .... लड़की

तुलसी.......................... रामचरितमानस

कटक .... साड़ी

पचास मील...................... गति

आम............................ फल

अनुभव विस्तार

१. वीर-महिला की इस कहानी में कौन - कौन से पुरुषों के नाम आए हैं ? इतिहास की कुछ अन्य वीर स्त्रियों की कहानियाँ खोजो ।

२. झाँसी की रानी के जीवन की कहानी अपने शब्दों में लिखो और यह भी बताओ कि उनका बचपन तुम्हारे बचपन से कैसे अलग था ?

३. झाँसी की रानी जैसी एक कविता लिखकर कक्षा में सबको सुनाओ ।

४. 'भारत की महान नारियाँ' शीर्षक शृंखला की अन्य पुस्तकें पढ़ो ।

अंतरिक्ष सूट में बंदर

FLJRC4

अमृतलाल नागर

(इस काल्पनिक कहानी में एक लड़की की कहानी है, जो घूमती-घूमती परलोक से हमारी धरती पर आ जाती है । यहाँ का वातावरण, फूल तथा प्राणी उसे बहुत अच्छे लगते हैं । बाबा जी उसकी मदद करते हैं । उसके माता-पिता भी भारत-भूमि पर आकर खुश होते हैं । वे बाबा जी को अपने साथ चलने के लिए कहते हैं, लेकिन बाबा जी मना कर देते हैं । वे कहते हैं कि जब भारत देश के बच्चे उनके लिए सूट बनाएँगे तब वे परलोक की सैर पर जाएँगे । अंत में बच्चों से बाबा जी की इच्छा पूरी करने के लिए प्रार्थना की गई है ।)

आकाश के अनगिनत तारों में हमारी धरती की तरह ऐसी बहुत-सी धरतियाँ हैं, जिनकी सभ्यता शायद हमसे अधिक बढ़ी-चढ़ी हुई हैं । एक जगह तो नन्हे-मुन्ने बच्चे तक अंतरिक्ष की सैर किया करते हैं । उन्होंने ऐसे अंतरिक्ष सूट बना लिए हैं, जिसमें छोटी किंतु बड़ी ही शाक्तिशाली मशीनें लगी हुई हैं । नन्हे-नन्हे ट्रांजिस्टरों जैसे रॉकेट लगे हुए हैं । बच्चे उसे पहनकर मशीनों को चलाते हुए आकाश में लाखों मील की सैर बड़ी आसानी से कर लिया करते हैं । उन्हीं में एक लड़की थी । उसकी आयु आठ-नौ साल से अधिक न थी, पर वह बड़ी तेज और साहसी थी । अपने स्कूल की अंतरिक्ष दौड़ों में वह कई बार फास्ट आ चुकी थी और छुट्टियों में अक्सर वह इतनी-इतनी दूर उड़ा करती थी, जितनी दूर तक उस दुनिया के बड़े-बड़े उड़ाकू भी नहीं गए होते थे ।

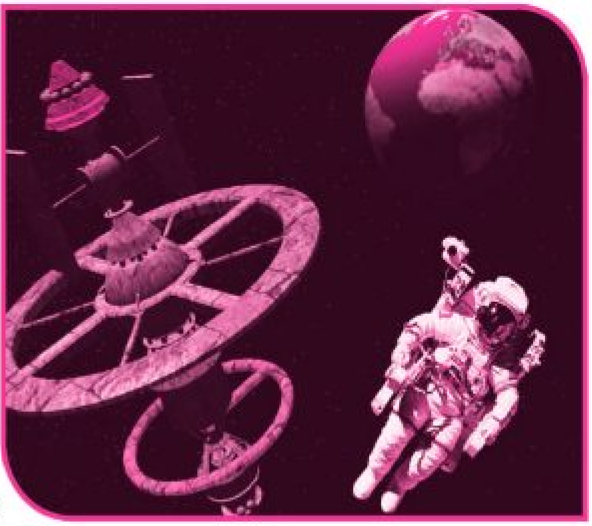

एक दिन अपना अंतरिक्ष सूट पहनकर वह लड़की उड़ी और खेल के जोश में अपनी उड़ान की गति तेज करते करते आकाश में ऐसी जगह पहुँच गई जहाँ लाखों मील तक घना अंधकार छाया था । बस अँधेरा-ही-अँधेरा, घटाटोप अँधेरा । अँधेरे के कारण वह लड़की घबरा तो अवश्य गई पर उसने हिम्मत न हारी । अपने सूट में लगी नन्ही शक्तिशाली मशीनों की सहायता से पूरी स्पीड में, यानी एक सेकेंड में पाँच हजार किलोमीटर की उड़ान भरते हुए दो घंटे में आखिरकार उसने वह अंधकार पार कर ही लिया । संयोग से वह हमारी पृथ्वी पर आ गई और कश्मीर में अमरनाथ के पास एक झील के किनारे उतरी । वह लड़की बेहद थक गई थी और नई दुनिया में आने के कारण कुछ घबराई हुई भी थी । फिर भी, आस-पास का दृश्य देखकर वह बड़ी खुश हुई । सुंदर झील देखकर उसकी नहाने

की इच्छा हुई । एक चट्टान की आड़ में अपना अंतरिक्ष सुट रखकर वह झील में नहाने लगी । उसकी दुनिया में जलवायु तो लगभग हमारी दुनिया जैसी ही थी, पर वहाँ का पानी यहाँ जैसा निर्मल और शीतल नहीं होता, हवा में भी ऐसी बहार नहीं, इतने चटक रंग के सुंदर सुगंधित फूल भी उसने पहली ही बार देखे थे । नहा-धोकर वह एकदम ताजी हो गई और उसे भूख लग आई । भोजन की तलाश में वह आस-पास भटकने लगी । उसने अंतरिक्ष सूट अपने कंधे पर रख लिया था ।

झील के पास ही पेड़ों के झुरमुट में एक बूढ़े साधु रहते थे । उनके पास बंदर-बंदरिया का एक पालतू जोड़ा भी था । बूढ़े बाबा ने अपनी कुटी के सामने एक बड़ी सुंदर और प्यारी-प्यारी लड़की को भटकते देखा तो उठकर आए । पूछने लगे, बेटी कहाँ से आई हो ? वह लड़की उनकी बोली तो न समझी, पर बात अवश्य समझ गई । आकाश की ओर संकेत करके उसने कहा कि परलोक से आई हूँ और भूखी हूँ । बूढ़े बाबा भी उसके आकाश की ओर वाले इशारे को तो न समझे पर भूख की बात समझ गए, तुरंत कुटी में से मीठे फल ले आए । लड़की खुशी से फल खाने लगी । बूढ़े बाबा ने उसके लिए तुरंत अपनी गाय दुही और दूध ले आए । लड़की को स्वाद -सुख मिला । बोली न समझने पर भी उनमें इशारों से खूब हँसाइयाँ हुईं । बाबा ने बंदर -बंदरिया के खेल दिखलाकर उसको खूब हँसाया । लड़की अब अपनी दुनिया, अपने घर जाने के लिए अंतरिक्ष सूट पहनने लगी । यह अजब पोशाक देखकर बाबा को बड़ी हैरानी हुई । उनसे भी अधिक बंदरों को हैरानी हुई । उन्हें शायद यह अचरज लगा होगा कि यह जो अभी प्यारी -प्यारी लड़की जैसी लग रही थी, एकाएक बेदुम की विचित्र बंदरिया कैसे बन गई । और फिर उस 'बंदरिया' ने एकाएक अपने सूट में टँके हुए एक नन्हे - से चक्के को घुमाया और सर्र से ऊपर उठ गई । बाबा जी को अब लड़की के उस संकेत का सही अनुमान लगा जो उसने अपने घर का पता बतलाने के लिए आकाश की ओर हाथ उठाकर किया था । खैर !

लड़की पाँच-छह घंटे की उड़ान के बाद वापस अपनी दुनिया में पहुँच गई । फिर तो उसे ऐसा चसका लग गया था कि हर छुट्टी के दिन वह बाबा जी के पास उड़ आती और मजे से झील में तैरती, नहाती, मीठे फल खाती और बंदर-बंदरिया के तमाशे देखकर बाबा जी के साथ खूब हँसा करती । आते-जाते वह थोड़ी - बहुत हिंदी भी सीख गई थी ।

बंदर उस लड़की को अपना अंतरिक्ष सुट उतारते, पहनते और नन्हा चक्का घूमाकर उड़ते हुए बराबर गौर से देखा करता था । एक दिन जब लड़की नहा रही थी और बाबा जी फल तोड़ने गए थे, बंदर ने वह अंतरिक्ष सुट पहन लिया और चक्के को घुमाते ही आसमान में उड़ने लगा । लड़की ने नहाते हुए जब यह देखा तो वह बड़ी घबराई । बाबा जी ने भी देखा और परेशान होकर दौड़ते हुए आए । बंदर आसमान में उड़-उड़कर परेशान हो रहा था और दूसरे पंछियों को भी अपनी उलटी-सीधी उड़ानों से परेशान कर रहा था ।

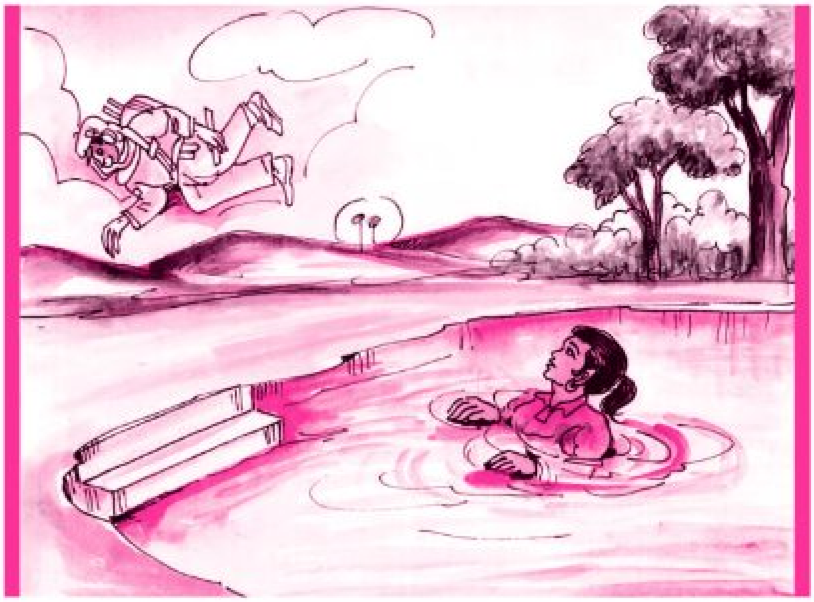

कभी चक्का घुमाते ही सर्र से ऊपर जाता फिर नीचे आता । कभी घबराहट में दूसरा चक्का घुमाता और उलट जाता । वह भी घबरा रहा था और घबराहट में दोनों चक्के घुमाकर वह और भी परेशान हो रहा था । कभी सर्र से ऊपर कभी सर्र से नीचे, कभी खट से सीधा कभी पट से उलटा !

लड़की को यह घबराहट हो रही थी कि अगर उसकी मशीनें बिगड़ गईं तो वह अपने घर कैसे पहुँचेगी । वह रोने लगी । बाबा जी ने उसे दिलासा दिया और बंदर को नीचे लाने की तरकीब करने लगे । उन्होंने बंदरिया के गले में रस्सी का फंदा डालकर पेड़ की ऊँची डाल से बाँध दिया और उसे सड़ासड़ सांटियाँ मारने लगे । बंदरिया जोर जोर से 'चीं-चीं-चीं' चिल्लाने लगी । बंदर उसकी आवाज सुनकर घबरा गया और उलटे-सीधे चक्के घुमाकर नीचे आने के जतन करने लगा । राम-राम करके वह पकड़ाई में आया । लड़की को अपना सुट मिला । मशीनों के कल -पुरजे सौभाग्य से ठीक थे । बाबा जी ने उसके सुट में टँगे झोले में फल रख दिए । वह उड़ गई ।

उस दिन बंदरलीला के कारण उसे घर पहुँचने में काफी देर हो गई । जब उसके माँ - बाप ने पूछा तब उसने सच-सच बतला दिया और अपने घरवालों को हमारी दुनिया के फल खिलाए । वे सब बड़े प्रसन्न हुए । अगली छुट्‌टी पड़ने पर वे अपनी बेटी के साथ बाबा जी से मिलने आए । अपने यहाँ के मेवे खिलाए, पर हमारे फल उनके सेवों से अधिक स्वादिष्ट थे । चलते समय लड़की के माता-पिता ने बाबा जी से कहा कि हमारी दुनिया की सैर करने चलिए । वह उनके लिए एक अंतरिक्ष सूट भी अपने साथ लाए थे, परंतु बाबा जी ने लड़की के द्‌वारा उसके पिता से कहा कि जब उनके भारत देश के बच्चे बड़े होकर ऐसा ही सूट ईजाद कर लेंगे, तभी वह जाएँगे । बच्चो, बाबा जी के लिए ऐसा सूट बना दो ।

शब्द-अर्थ

अंतरिक्ष - आकाश

घटाटोप - घने बादलों की छाई हुई घटा

शीतल- ठंडा

तुरंत - जल्दी

घना - गहरा

निर्मल - स्वच्छ

परलोक - दूसरा लोक

बेदुम- बिना दुम या पूँछ के

ईजाद - आविष्कार, नई चीज बनाना

अभ्यास

बोध और विचार :

१. अंतरीक्ष की क्या-क्या विशेषताएँ थीं ?

२. साधु बाबा ने लड़की की देखभाल कैसे की ?

३. बंदर ने क्या शरारत की ?

४. लड़की को धरती की वस्तुएँ कैसी लगीं ?

५. बाबा जी ने क्या कह कर लड़की के साथ जाने से मना कर दिया ?

६. बंदर को नीचे लाने के लिए साधु बाबा ने क्या उपाय किया ?

भाषा-बोध :

क. नीचे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं, उन शब्दों के लिंग बदलो :

लड़की.............................

बूढ़ा...............................

माता..............................

बेटी...............................

श्रीमान.............................

साधु...............................

(ख) शब्द के अंत में 'ई' प्रत्यय जोड़कर संज्ञा शब्द बनाओ :

पढ़ा ....

बना ....

रंगा...................

कढ़ा ....

बुना ....

अनुभव विस्तार :

१. अब तक भारत के कितने अंतरिक्ष यान छोड़े गए हैं ?

२. अंतरिक्ष यान के बारे में और जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ अंतरिक्ष यान छोड़े जाने के चित्रों का संग्रह करो ।

३. कल्पना के आधार पर बताओ कि बीस वर्ष बाद भारत की तस्वीर क्या होगी ?

चंद्रशेखर वेंकटरमण

संकलित

FLTMDR

(यह पाठ विश्वविख्यात भारतीय वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकटरमण की जीवनी के रूप में प्रस्तुत किया गया है । ये नोबेल पुरस्कार जीतनेवाले भारत के पहले वैज्ञानिक हैं । परिश्रमी स्वभाव और अनुसंधान-कार्य में इनकी लगन और गहरी पैठ ने इन्हें विज्ञान के क्षेत्र में जो सफलता दिलाई, उसने भारत के नाम को पूरे विश्व में उज्ज्वल कर दिया ।)

विज्ञान के क्षेत्र में भारतवर्ष की उन्नति से आज सारा विश्व परिचित है । आधुनिक विज्ञान से भारतीयों का संपर्क उस समय हुआ जब यूरोपीय लोग हमारे यहाँ आए । परंतु आज समस्त विश्व भारतीयों की विशेष प्रतिभा तथा योग्यता से परिचित है । आचार्य चंद्रशेखर वेंकटरमण उच्च कोटि के वैज्ञानिक थे । उनकी वैज्ञानिक खोजों को विश्व भर में सराहा गया तथा उन्हें अत्यंत सम्माननीय नोबेल पुरस्कार से विभूषित किया गया । उनकी उपलब्धि से भारत का मस्तक गर्व से और ऊँचा उठ गया ।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमण का जन्म १७ नवंबर, १८८८ को दक्षिण भारत के त्रिचनापल्ली नगर में हुआ था । पिता श्री चंद्रशेखर अय्यर हाईस्कूल में भौतिक शास्त्र के अध्यापक थे । माता श्रीमती पार्वती अत्यंत विदुषी तथा धार्मिक विचारों की महिला थीं । माता-पिता अत्यंत सरल स्वभाव के थे । बचपन से ही बालक रमण का विज्ञान के प्रति रुझान था । विज्ञान के साथ-साथ संगीत में भी उनकी रुचि थी । दिन भर तरह- तरह की पुस्तकों तथा वैज्ञानिक परीक्षणों में जुटे रहने के बाद, वे संगीत की मधुर ध्वनि में लीन हो जाते थे ।

बालक रमण बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्‌धि के थे । उन्होंने चौदह वर्ष की आयु में ही भौतिक शास्त्र में स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली । मद्रास विश्वविद्‌यालय में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा उनकी विशेष योग्यता के लिए उन्हें 'अर्णी स्वर्ण पदक' से भी सम्मानित किया गया ।

बात उन दिनों की है, जब वे स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त कर रहे थे । प्रोफेसर साहब ने छात्रों को एक परीक्षण करने के लिए दिया । परीक्षण सफल न होने पर छात्रों ने अपनी समस्या प्रोफेसर साहब को बताई । उन्होंने उसे सुलझाने का प्रयास किया परंतु वे सफल न हुए । रमण ने परीक्षण में तनिक बुद्‌धि लगाई और झट ही समस्या का मूल कारण जान लिया ।

रमण ने अपनी इस उपलब्धि को लिखकर प्रोफेसर साहब को दे दिया । प्रोफेसर ने इसे साधारण-सा लेख समझ, इसकी ओर ध्यान नहीं दिया । रमण मन ही मन जानते थे कि भौतिकी के क्षेत्र में यह साधारण

नहीं है । उन्होंने अपना यह लेख इंग्लैंड, में प्रकाशित होनेवाली फिलोसोफिकल मैगजीन में भेज दिया । वहाँ लेख प्रकाशित होने के बाद, उसकी चर्चा होने लगी । अब उन्होंने अपनी खोजों पर लिखे विभिन्न लेख कई पत्र-पत्रिकाओं में भेजे । धीरे-धीरे संसार भर में लोग उन्हें जानने लगे ।

रमण की इस असाधारण प्रसिद्धि पर भारत सरकार ने उन्हें विदेश में उच्च शिक्षा पाने के लिए भेजने की स्वीकृति दे दी । स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण वे अपनी शिक्षा पूरी न कर पाए और उन्हें स्वदेश लौटना पड़ा । इस दौरान उन्होंने अखिल भारतीय अर्थ प्रतियोगिता परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर, कोलकाता में उपनिदेशक का पद सँभाला ।

एक दिन रमण कार्यालय से घर लौट रहे थे कि उनकी दृष्टि एक बोर्ड पर पड़ी । उस पर लिखा था 'भारतीय विज्ञान संघ' । अगले ही दिन वे वहाँ पहुँच गए । उन्होंने अपना परिचय दिया । उपस्थित सभी वैज्ञानकि उनके नवीन आविष्कारों को जानकर अत्यंत प्रसन्न हुए । वेंकटरमण उसी समय उस वैज्ञानिक संस्था के सदस्य बना लिए गए । अब प्रयोगों का नया दौर आरंभ हुआ । अनेक लोगों ने इन्हें विदेश में रहकर खोज करने की सलाह दी । देश में सभी वैज्ञानिक साधन न होने पर भी, विदेश जाना उन्हें ठीक नहीं लगता था ।

अपने देश में रहकर ही रमण ने विशेष प्रकार की प्रकाश किरणों की खोज की जिन्हें बाद में 'रमण किरण' नाम दिया गया । उनकी खोजों के बाद ही स्पष्ट हो गया कि आकाश तथा समुद्र का जल नीला क्यों दिखाई देता है । उन्होंने यह भी खोज की कि जिन धातुओं के पार नहीं देखा जा सकता, उनमें भी प्रकाश का प्रवेश होता रहता है । समस्त विश्व उनकी इन अनूठी खोजों से हैरान रह गया । रुस, जर्मनी, इंग्लैंड, अमेरीका, इटली आदि अनेक देशों में उन्होंने अपनी खोजों के बारे में भाषण दिए ।

सन १९२९ में भारतीय विज्ञान कांग्रेस ने उन्हें अपना अध्यक्ष बनाया तथा डॉ. रमण को भारत सरकार की तरफ से भी सम्मानित किया गया । विश्व भर के अनेक विज्ञान संस्थानों ने इन्हें उपाधियाँ प्रदान कीं । सन १९३० में इन्हें विश्व का सर्वाधिक सम्माननीय नोबेल पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गई । सन १९५४ में भारत सरकार ने इन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया ।

निश्चित रूप से इनकी असाधारण प्रतिभा के कारण भारतवर्ष का मस्तक गर्व से सदा ऊँचा रहेगा ।

शब्द-अर्थ

भौतिक शास्त्र - फिजिक्स

रुझान - रुचि होना, झुकाव होना

आविष्कार - खोज

मूल - प्रारंभिक

सम्माननीय - आदर के योग्य

विदुषी - विद्वान स्त्री

कुशाग्र - तेज

स्नातकोत्तर - बी.ए.की परीक्षा से ऊपर की डिगरी

सर्वाधिक - सब से अधिक

अभ्यास

बोध और विचार :

१. चंद्रशेखर का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

२. पढ़ाई के अलावा बालक रमण की रुचि किसमें थी ?

३. चद्रशेखर वेंकटरमण के माता-पिता के विषय में तुम क्या जानते हो ? लिखो ।

४. रमण की वैज्ञानिक प्रतिभा का परिचय कब और कैसे मिला ?

५. रमण की खोजों के विषय में एक अनुच्छेद लिखो ।

६. चंद्रेशेखर वेंकट रमण को कौन कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था ?

७. आशय स्पष्ट करो :

क. उनकी उपलब्धि से भारत का मस्तक गर्व से और ऊँचा उठ गया ।

ख. अपने देश में रहकर ही रमण ने विशेष प्रकार की प्रकाश किरणों की खोज की ।

भाषा बोध :

१. लिंग बदलो :

कवि, अध्यापिका, बालिका, विद्वान

२. नीचे लिखे शब्दों के विलोम रूप लिखो :

शिक्षित, नवीन, विदेश, धनी, सरल

३. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :

क. विज्ञान को साथ साथ संगीत में भी उनके रुचि थी ।

ख. चंद्रशेखर ने भारत के नाम को पूरे विश्व में उज्ज्वल कर दी ।

ग. उनका उपलब्धि से भारत का मस्तक गर्व से ऊँचा चढ़ गया ।

घ. विदेशों में उहोंने अपनी खोजों की बारे में भाषण दिए ।

ङ. विदेश जाना उन्हें ठीक नहीं लगती थी ।

४. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो :

क. अनुठि

ख. प्रकास

ग. विस्व

घ. सम्मानीत

ङ. वैज्ञानीक

च. बुद्धी

छ. प्रसीद्धी

अनुभव विस्तार :

१. विज्ञान संग्रहालय की यात्रा पर विभिन्न जानकारी प्राप्त करो ।

२. 'भारतीय वैज्ञानिक तथा खोज' विषय पर चित्र संग्रह करो और अपनी कक्षा में प्रदर्शनी का आयोजन करो ।

३. भारत में किन-किन लोगों को नोबेल पुरस्कार मिला है जानकारी प्राप्त करो ।

शांतिदूत श्रीकृष्ण

संकलित

FM3IFE

शांति की बातचीत करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गए । उनके साथ सात्यकि भी गए थे । रास्ते में कुशस्थल नामक स्थान में वह एक रात विश्राम करने के लिए ठहरे । हस्तिनापुर में जब यह खबर पहुँची कि श्रीकृष्ण पांडवों की ओर से दूत बनकर संधि चर्चा के लिए आ रहे हैं, तो धृतराष्ट्र ने आज्ञा दी कि नगर को खूब सजाया जाए । पुरवासियों ने द्वारिकाधीश के स्वागत की धूमधाम से तैयारियाँ कीं । दु:शासन का भवन दुर्योधन के भवन से अधिक ऊँचा और सुंदर था । इसलिए धृतराष्ट्र ने आज्ञा दी कि उसी भवन में श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध किया जाए । श्रीकृष्ण हस्तिनापुर पहुँच गए । पहले श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के भवन में गए । फिर धृतराष्ट्र से विदा लेकर वह विदुर के भवन में गए । कुंती वहीं कृष्ण की प्रतीक्षा में बैठी थीं । श्रीकृष्ण को देखते ही उन्हें अपने पुत्रों का स्मरण हो आया । श्रीकृष्ण ने उन्हें मीठे वचनों से सांत्वना दी और उनसे विदा लेकर दुर्योधन के भवन में गए । दुर्योधन ने श्रीकृष्ण का शानदार स्वागत किया और उचित आदर- सत्कार करके भोजन का न्यौता दिया । श्रीकृष्ण ने कहा– ''राजन् ! जिस उद्देश्य को लेकर मैं यहाँ आया हूँ, वह पूरा हो जाए, तब मुझे भोजन का न्यौता देना उचित होगा'' । यह कहकर वे विदुर के यहाँ चले गए और वहाँ भोजन करके विश्राम किया ।

इसके बाद श्रीकृष्ण और विदुर में आगे के कार्यक्रम के बारे में सलाह हुई । विदुर ने कहा– ''उनकी सभा में आपका जाना भी उचित नहीं है ।''

दुर्योधनादि के स्वभाव से जो भी परिचित थे, उनका भी यही कहना था कि वे लोग कोई-न-कोई कुचक्र रचकर श्रीकृष्ण के प्राणों तक को हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे । विदुर की बातें ध्यान से सुनने के बाद श्रीकृष्ण बोले - ''मेरे प्राणों की चिंता आप न करें ।

दूसरे दिन सवेरे दुर्योधन और शकुनि ने आकर श्रीकृष्ण से कहा महाराज धृतराष्ट्र आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस पर विदुर को साथ लेकर श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के भवन में गए ।

वासुदेव के सभा में प्रविष्ट होते ही सभी सभासद उठ खड़े हुए । श्रीकृष्ण ने बड़ों को विधिवत् नमस्कार किया और आसन पर बैठे । राजदूत एवं सम्भ्रांत अतिथि-सा उनका सत्कार किया गया । इसके बाद श्रीकृष्ण उठे और पांडवों की माँग सभा के सामने रखी । फिर वह धृतराष्ट्र की ओर देखकर बोले– ''राजन् ! पांडव शांतिप्रिय हैं, परंतु साथ ही यह भी समझ लोजिए कि वे युद्ध के लिए भी तैयार हैं । पांडव आपको पिता स्वरूप मानते हैं। ऐसा उपाय करें, जिसमें आप भाग्यशाली बनें ।''

यह सुनकर धृतराष्ट्र ने कहा – ''सभासदो ! मैं भी वही चाहता हूँ, जो श्रीकृष्ण को प्रिय है ।''

इस पर श्रीकृष्ण दुर्योधन से बोले–''मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि पांडवों को आधा राज्य लौटा दो और उनके साथ संधि कर लो । यदि यह बात स्वीकृत हो गई, तो स्वयं पांडव तुम्हें युवराज और धृतराष्ट्र को महाराज के रूप में सहर्ष स्वीकार कर लेंगे ।''

भीष्म और द्रोण ने भी दुर्योधन को बहुत समझाया । फिर भी दुर्योधन ने अपना हठ नहीं छोड़ा । वह श्रीकृष्ण का प्रस्ताव स्वीकार करने पर राजी न हुआ । धृतराष्ट्र ने दोबारा पुत्र से आग्रह किया कि श्रीकृष्ण का प्रस्ताव मान ले, नहीं तो कुल का सर्वनाश हो जाएगा । दुर्योधन ने अपने आपको निर्दोष सिद्ध करने की जो चेष्टा की थी, उससे श्रीकृष्ण को हँसी आ गई । तभी श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को उन सब अत्याचारों का विस्तार से स्मरण दिलाया, जो उसने पांडवों पर किए थे । भीष्म, द्रोण आदि प्रमुख वृद्धों ने भी श्रीकृष्ण के इस वक्तव्य का समर्थन किया ।

यह देखकर दु:शासन क्रुद्ध हो उठा और दुर्योधन से बोला –''भाई, मालूम होता है, ये लोग आपको कैद करके कहीं पांडवों के हवाले न कर दें । इसलिए चलिए, यहाँ से निकल चलें ।'' इस पर दुर्योधन उठा और अपने भाइयों के साथ सभा से बाहर चला गया ।

इसी बीच धृतराष्ट्र ने विदुर से कहा –''तुम जरा गांधारी को सभा में ले आओ । उसकी समझ बहुत स्पष्ट है और वह दूर की सोच सकती है । हो सकता है, उसकी बातें दुर्योधन मान ले ।'' यह सुनकर विदुर ने सेवकों को आज्ञा देकर गांधारी को बुला लाने को भेजा । गांधारी भी सभा में आई और घृतराष्ट्र ने दुर्योधन को भी सभा में फिर से बुलाया । दुर्योधन सभा में लौट आया । क्रोध के कारण उसकी आँखें लाल हो रही थीं । गांधारी ने भी उसे कई तरह से समझाया, परंतु दुर्योधन ये बातें माननेवाला कब था ! अपनी माँ को भी उसने मना कर दिया और दोबारा सभा से निकलकर चला गया । बाहर जाकर दुर्योधन ने अपने साथियों के साथ मिलकर एक षड्यंत्र रचा और राजदूत श्रीकृष्ण को पकड़ने का प्रयत्न किया । श्रीकृष्ण ने तो पहले ही से इन बातों की कल्पना कर ली थी । दुर्योधन की यह चेष्टा देखकर वह हँस पड़े । श्रीकृष्ण उठे । सात्यकि और विदुर उनके दोनों ओर हो गए । सब सभासदों से विधिवत् आज्ञा ली । सभा से चलकर सीधे कुंती के पास पहुँचे और उनको सभा का सारा हाल कह सुनाया ।

कुंती बोली – ''हे कृष्ण ! अब तुम्हीं मेरे पुत्रों के रक्षक हो । श्रीकृष्ण रथ पर आरूढ़ होकर उपप्लव की ओर तेजी से रवाना हो गए । युद्ध अब अनिवार्य हो गया था । श्रीकृष्ण के हस्तिनापुर से लौटते ही शांति स्थापना की जो थोड़ी -बहुत आशा थी वह भी लुप्त हो गई । कुंती को जब पता चला कि कुलनाशी युद्ध छिड़ेगा ही, तो वह बहुत व्याकुल हो गईं ।

चिंता के कारण आकुल हो रही कुंती अपने पुत्रों की सुरक्षा का विचार करती हुई गंगा के किनारे पहुँची, जहाँ कर्ण रोज संध्या-बंदन किया करता था । मध्याह्न के बाद कर्ण का जप पूरा हुआ, तो उसे यह जानकर असीम आश्चर्य हुआ कि महाराज पांडु की पत्नी और पांडवों की माता कुंती ही उसका उत्तरीय सिर पर लिए खड़ी है ।

कर्ण ने शिष्टतापूर्वक अभिवादन करके कहा, ''आज्ञा दीजिए, मैं आपकी क्या सेवा करूँ ?''

कुंती ने गद्‌गद् स्वर में कहा –''कर्ण ! यह न समझो कि तुम केवल सुत-पुत्र ही हो । न तो राधा तुम्हारी माँ है, न अधिरथ तुम्हारे पिता । तुमको जानना चाहिए कि राजकुमारी पृथा की कोख से तुम उत्पन्न हुए हो । तुम सूर्य के अंश हो ।'' थोड़ा सुस्ताने के बाद वह फिर बोली –''बेटा ! दुर्योधन के पक्ष में होकर तुम अपने भाइयों से ही शत्रुता कर रहे हो । धृतराष्ट्र के लड़कों के आश्रित रहना तुम्हारे लिए अपमान की बात है । तुम अर्जुन के साथ मिल जाओ, वीरता से लड़ो और राज्य प्राप्त करो । वे भी तुम्हारे अधीन रहेंगे और तुम उनसे घिरे हुए प्रकाशमान होओगे ।''

कर्ण माता कुंती का यह अनुरोध सुनकर बोला–''माँ ! यदि इस समय मैं दुर्योधन का साथ छोड़कर पांडवों की तरफ चला गया, तो लोग मुझे ही कायर कहेंगे । अब, जब युद्ध होना निश्चित हो गया है, तो मैं उनको मझधार में कैसे छोड़ जाऊँ ? यह तुम्हारी कैसी सलाह है ? आज मेरा कर्तव्य यही है कि मैं पांडवो के विरुद्ध सारी शक्ति लगाकर लड़ूँ । मैं तुमसे असत्य क्यों बोलूँ ? मुझे क्षमा कर दो । लेकिन हाँ, तुम्हारी भी बात एकदम व्यर्थ नहीं जाएगी । अब मैं यह करूँगा कि अर्जुन को छोड़कर और किसी पांडव के प्राण नहीं लूँगा । या तो अर्जुन इस युद्ध में काम आएगा, या मैं । दोनों में से एक को तो मरना ही पड़ेगा । शेष चारों पांडव मुझे चाहे कितना भी तंग करें, मैं उनको नहीं मारूँगा । माँ, तुम्हारे तो पाँच पुत्र हर हालत में रहेंगे, चाहे मैं मर जाऊँ, चाहे अर्जुन । हम दोनों में से एक बचेगा और बाकी चार तो रहेंगे ही । तुम चिंता न करो ।''

अपने बड़े पुत्र की ये सारी बातें सुनकर माता कुंती का मन बहुत विचलित हुआ, परंतु उन्होंने उसे अपने गले से लगा लिया और बोली –''तुम्हारा कल्याण हो ।'' कर्ण को इस प्रकार आशीर्वाद देकर कुंती अपने महल में चली आई ।

प्रार्थना

FMCEH2

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना ।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे,
भूल कर भी कोई भूल हो ना ।
इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना ।
हर तरफ जुल्म है बेबसी है,
सेहमा सेहमा स हर आदमी है ।
पाप का बोझ बढता ही जाये,
जाने कैसे ये धरती थमी है ।
बोझ ममता से तू ये उठाले,
मेरे रचना का ये अंत होगा ।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे,
भूल कर भी कोई भूल हो ना ।
इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना ।
हम अंधेरे में है रोशनी दे,
खो ना दे खुदको ही दुश्मनी से ।

हम सजा पाए अपने किये की,
मौत भी हो तो सेहले खुसी से ।
कल जो गुजरा है फिर से ना गुजरे,
ओनेवाला वो कल ऐसा हो ना ।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे,
भूल कर भी कोई भूल हो ना ।
इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना ।

■ ■ ■